तृतीय अध्याय

नीरजा माधव के कथा साहित्य में नारीपात्रों का परिचय

कथा साहित्य कहानी व उपन्यास का मिला रूप है। गद्य साहित्य में उपन्यास व कहानी प्रमुख विधा है। कथा साहित्य के अंतर्गत आने वाली विधाओं में भावनात्मक ता आधुनिकता सामाजिक व देशभक्त आदि गुणों से युक्त है। कथ् धातु से निष्पन कथा शब्द का साधारण अर्थ है, 'वह जो कहा जाए'। इसमें कहने वाले के अतिरिक्त सुनने वाले की स्थिति भी अंतर्भुक्त है।

प्राचीन काल मे साहित्य का रूप सिर्फ काव्य ही था, परंतु विकासोन्मुख सामंत युग में वर्ग भावना मे विभक्त व संभ्रांत समाज के निर्माण आदि की प्रक्रिया में साहित्य के दो रूप हो गए। एक रूप हुआ जिसमें कविताएं और महाकाव्य लिखे जाते हैं। दूसरा रूप गद्य साहित्य का हुआ दोनों रूपो में हिंदी साहित्य समृद्ध है। भारतीय साहित्य का विकास भी अन्य कलाओं के विकास के साथ ही हुआ। भारतीय साहित्य की परंपरा ऋग्वेद से लेकर आज तक चल रही है। साहित्य में कथा का संबंध मानव के भावो से होता है। जो प्राचीन काल से होता आ रहा था आज भी इसका महत्व कम नहीं हुआ है। इस शोध प्रबंध के इस अध्याय के अंतर्गत नीरजाजी के कथा साहित्य के नारी पात्रों का परिचय दिया गया है। जिसमें 15 कहानी व सात उपन्यास का वर्णन दिया गया है।

3.1 नीरजा माधव की कहानियों में नारी पात्रों का परिचय

3.1.1.

कहानी संग्रह : 'चुप चंतारा रोना नहीं'

कहानी : 'चुप चंतारा रोना नहीं'

पात्र : चंतारा

'चुप चंतारा रोना नहीं' कहानी में निम्न वर्ग की गरीब मजदूर महिला चंतारा की कहानी है। उसके दो बच्चे हैं। एक बच्चा उसका बेटा फुग्गी जो १४-१५ वर्ष का है, दूसरी उसकी बेटी जो तीन साल की है। चंतारा अपने पति व बेटे के साथ वही पर मजदूरी करती हैं। बेटी तो छोटी है वह चंतारा के साथ ही रहती है। मसलन पूरा परिवार एक साथ मजदूरी करता है चंतारा का। वह शादी समारोह में पूड़ी बनाती/बेलती है व उसका पति राजसैनिकों की पोशाक पहन कर दरबान बनता है और उसका बेटा कार्यक्रम में 'स्टैचू' बनता है। कहानी में चंतारा पूड़ी बेलने में लगी हुई है। उसका ध्यान बार-बार अपने बेटे फुग्गी की तरफ जाता है जो कि आज'भगवान शंकर' का स्टैचू बनेगा। चंतारा माँ है और उसे अपने बेटे के भूखे होने की चिंता है। वह जानती है कि फुग्गी ने कुछ खाया नहीं है। इतनी ठण्ड में वह भूखे पेट स्टैचू बनेगा। वह उसे कुछ खिलाने की ताक में रहती है। बड़ी मुश्किल से वो अपने बेटे के लिए दो पूड़ी छुपा के ले जाती है। जो कि एक ही खिला पाती है। खिलाते हुए मालिक देख लेता है और बुरा-भला कहता है। बेबस माँ मालिक के पैरों पर गिर जाती है, गिड़गिड़ाने लगती है। चंतारा की एक दोस्त भी है शांति, जो साथ में ही पूड़ी बेल रही है। और एक है सरूप साव जो पूड़ी को पका रहे हैं, जो कि चंतारा से विशेष अनुरक्त हैं और चंतारा की सहायता भी करते हैं।

शादी समारोह में खूब चहल-पहल है। दूल्हा-दुल्हन की वरमाला के समय चंतारा साथ में काम करनेवालों के साथ वरमाला कार्यक्रम देखने जाती है। जहाँ सरूप साव भीड़ का फायदा उठाके उसके नजदीक आना चाहते हैं परंतु चंतारा सरूप साव से दूर हट जाती है।

उस शादी समारोह की चमक-दमक में अचानक शोरगुल सुनकर चंतारा चौंक जाती है । कोई बताता है कि फुग्गी, जो उसका ही लड़का है वह स्टैचू बना था, ठंड के कारण मूर्छित हो जाता है जिससे चंतारा परेशान हो जाती है। उसके मुँह से चीत्कार निकल जाती है। उसकी आवाज सुनकर मालिक आ जाते हैं और उसे शांत रहने को कहते हैं। उससे विनम्र निवेदन करते हैं, गिड़गिड़ाते भी हैं। कुछ देर पहले ही चंतारा गिड़गिड़ा रही थी ।तब मालिक उसे बुरा-भला कहते है । कुछ ही देर बाद जब मालिक के बच्चे पर आई तो मालिक चंतारा को चुप रहने को बोलते है । समझौता हमेशा स्त्री ही करती है । चंतारा गरीब स्त्री है वह अपना मुह कपड़े से बन्द कर के अपने बच्चे फुग्गी की तरफ भागती है । अपने बच्चे के लिए वह रो नही पाती है क्यू की यदि वह रोएगी तो शादी का कार्यक्रम नहीं हो पाएगा ।

चंतारा के रूप में लेखिका ने एक ऐसी गरीब महिला मजदूर का व्यक्तित्व गढ़ा है जो पूर्णतः अपने परिवार को समर्पित है। पूरी कहानी में वह अपने काम व परिवार के प्रति चिंता व संघर्ष करती है स्त्री किसी भी परिवार का केंद्र बिन्दु होती है। चंतारा अपनी ३ वर्षीय बेटी को हमेशा पास ही रखती है । बेटी कहने-समझाने पर नहीं मानती है तो झल्लाकर मार भी देती है। अपने पति की प्रशंसा में वह मन ही मन प्रसन्न होती रहती है। तभी उसका पति आ जाता है । दोनों शादी की चहल-पहल पर बात करते हैं । वे दोनों खुशहाल दम्पत्ति की तरह बात करते हैं। चंतारा का पति जिसे वह फुग्गी के ताऊ कहकर परिचय या संबोधन करती है। कहानी की नायिका चंतारा उसका लड़का फुग्गी जो शादी समारोह में स्टैचू बनता है। दरअसल चंतारा की चिंता यही है कि फुग्गी को आज इस ठंड भरी रात में भगवान शंकर का स्टैचू बना रहे हैं। वह सुबह का ही कुछ खाए हुए है, भूखा भी है। चंतारा अपने प्रयास से बेटे को एक पूड़ी खिला भी देती है पर मालिक उसे भला बुरा कहते हैं। फिर कुछ ही समय में ऐसा हो जाता ही कि जो मालिक चंतारा के बच्चे को लेकर भला-बुरा कह रहे थे, वही मालिक जब अपने बच्चे पर बात आती है तो चंतारा से

गिड़गिड़ाते हैं। यहा पर पुरुषवादी सोच दिखाई देती है स्त्री दोनों बार समझौता कर के चुप हो जाती है। पर सच बात है कि इंसान पर जब आती है तभी वह समझता है वरना दूसरे इंसान की तकलीफ दूसरा नहीं समझता है और यदि स्त्री होती है तो उसकी आवाज लोग चुप करा देते है जैसे चंतारा समाज के कहने पर अपनी आवाज को दबा लेती है ,अपने मुह पर कपड़ा रख वहा से भाग जाती है।

3.1.2.

कहानी संग्रह : 'वाया पांडेपुर चौराहा'

कहानी : 'शीर्षक क्या दूं ?'

पात्र : हरीतिमा,सुदेशना व मैनादेवी।

यह कहानी आत्मकथात्मक रूप में लिखी गयी है। इसे लिखने वाली खुद को लेखिका बताती है यथा "इसे मैं ही लिख रही हूँ पर मैं वास्तव में लेखिका नहीं, मैं तो बस एक सामान्य-सी घरेलू औरत हूँ।"[1]

अपना परिचय स्वयं ही बताते हुए अपना नाम हरीतिमा बताती है, दो बच्चे व पति के साथ रहती है। स्वयं का परिचय 'शिशु शिक्षा मंदिर' की अध्यापिका व पति का परिचय 'प्रवक्त के रुप में परिचय देती है। यह कहानी आत्मकथात्मकशैली मे है। स्वयं के बारे में बताती है कि जब से सम्पादक से मेरी कहा-सुनी हुई है, भ्रष्टाचार पर मेरे लेख को पढ़कर सम्पादक ने छापने से मना कर दिया था, तभी से उसने अपने लेखन कार्य का समापन कर लेखन सम्बन्धी समस्त दस्तावेजों को दूर रख दिया था। आगे वह बताती है कि आज लेखन करने के लिए उसकी दो सहेलियों ने ही मजबूर कर दिया था। अपनी पहली सहेली सुदेशना का परिचय देते हुए हरीतिमा बताती हैं कि-

"सुदेशना, मेरी सहेली, पढ़ते समय से ही लेखिका बनने के आकर्षण से मोहविष्ट । इसी मोह ने आज उसे अपनी मंजिल तक आखिर पहुँचा ही दिया । सुदेशना एक बोल्ड लेखिका के रुप में प्रांतीय स्तर पर काफी चर्चित है । राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हो जाने के लिए पूरी तरह प्रयासरत और आशान्वित भी ।"[2]

हरीतिमा और सुदेशना की मुलाकात कॉलेज के बाद लम्बे समय बाद एक रेस्टोरेन्ट में हो गयी थी । वहीं पर दोनों की बातों से पता चलता है कि सुदेशना अपने कॉलेज के दोस्त जिससे वह शादी करने वाली थी या ऐसा कहें कि बिना शादी के ही विवाहित जैसे रहने लगी थी परंतु उससे उसने शादी नहीं की । उस व्यक्ति से शादी न करने का कारण सुदेशना नारी स्वतंत्रता में बाधक होना बताती है ।

तीसरी और अंतिम नारी पात्र है मैनावती सिंह, जो कि पिछली बार विधायक और मंत्री भी थी परन्तु अबकी बार मैनावती चुनाव हार चुकी है । ये तीनों नारियाँ एक साथ गेस्ट हाउस में प्रेस कांफ्रेंस करने जा रही हैं ।

हरीतिमा इस कहानी के सभी पात्र व घटनाओं को अपने तरीके या अपने नजरिए से देखती है व उसके गुण-दोष की समीक्षा भी करती है । सुदेशना के कपड़े की, उसके कॉलेज से लेकर अब तक के पुरुष मित्रों की व शादी करने न करने के झमेले आदि को वह अपने नजरिए से देखती है ।

तीसरी पात्र मैनावती, जो कि अपने को नारी मुक्ति की अग्रणी नेता मानती हैं, परन्तु उनमें सामान्य जनमानस की संवेदना नहीं है । उन्हें रौबदार कृत्रिम चेहरा बनाए हुए, मैनावती एक 'संवेदनाहीन व्यक्तित्व' लग रही है ।

नारी मुक्ति आन्दोलन से जुड़ी हुई मैनावती खुद को नारीवादी नेता मानती है, परन्तु नारीमुक्ति से सम्बन्धित कुछ भी बातें उनके मुँह से सुनाई नहीं देती हैं । नारीमुक्ति के सिद्धांतों और दर्शन की समझ उसमे नही दिखायी देती है ।

सुदेशना की एक बात पर वह अपना ज्ञान देते हुए कहती है कि- "यानी नारी मुक्ति की पहली सीढ़ी किचन से ही होकर गुजरती है।"[3]

इस तरह की अल्पज्ञान की बात मैनावती बार-बार करती है। ऐसे ही जब मैनावती की वाता-कहनी रोड़ पर चल रहे दूसरी गाड़ी के ड्राइवर से हो जाती है तब मैनावती उससे लड़ाई के लिए तैयार हो जाती है। इस पर हरीतिमा को मैनावती पुरुष-आवरण को ओढ़कर अपना अमूल्य नारीत्व रुप बिगाड़ लेनेवाली लगती है। और अन्त में हरीतिमा जो कि कहानी (जो आत्मकथ्य रुप में है)की लेखिका भी है अपनी इस स्वानुभूति को वह अपने पति से बाँटना भी सही नहीं समझती है। इस कहानी को लिखकर हरीतिमा यह निष्कर्ष नहीं कर पा रही है कि इसको क्या शीर्षक दे ? वह ऐसा शीर्षक ढूँढ़ रही है कि जिसमें उसकी अनुभूति भी रहे और कहानी का सार्थक शीर्षक भी हो।

3.1.3

कहानी संग्रह : 'वाया पांडेपुर चौराहा'

कहानी : 'उष्ट्र उष्ट्र ही सही'।

पात्र : विद्योत्तमा

इस कहानी की नायिका विद्योत्तमा जो नौकरीपेशे वाली औरत है, बहुत ही कर्मठ व ईमानदार है। वह अपने काम के प्रति बहुत सतर्क रहती है। सरकारी महकमे में व्याप्त भ्रष्टाचार से परेशान विद्योत्तमा परम्परागत सरकारी कार्यालयों को कांजी हाउस बताती है। वह बताती है कि सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार ऐसे हो रहा है जैसे कि आवारा पशु जिसने जहाँ हरा चारा देखा वहीं मुँह मार लिया। सरकारी कर्मचारी भी ऐसे ही होते हैं। ओ.टी.ए. का फर्जी भुगतान करवाने के लिए या फर्जी चिकित्सकीय खर्च का भुगतान आदि के लिए हमेशा लगे रहते हैं। जैसे लगता है कि सरकारी पैसे फर्जी प्रमाणपत्र पर

निकालना अनिवार्य है। जबकि यदि कभी जाँच हुई तो निश्चय ही सैंक्शन लेटर जारी करने वाला अधिकारी ही फँसता है। इस तरह के भ्रष्टाचार से परेशान विद्योत्तमा अपना ट्रान्सफर एक विभाग से दूसरे विभाग में करवा लेती है । परन्तु भ्रष्टाचार के इस तंत्र में कोई भी विभाग अछूता नहीं है। विद्योत्तमा अपने स्वाभिमानी व ईमानदारी के गुणों का श्रेय अपने स्वर्गीय पिताजी को देती है । उसके पिताजी भी सरकारी कर्मचारी थे, जिनके उपर भी भ्रष्टाचार का आरोप लगा और इसी आघात से उनका स्वर्गवास हो गया। विद्योत्तमा भी जब भ्रष्टाचार करने वालो से परेशान होती है तो वह अपने पिता की तस्वीर से बातें कर लेती है।

विद्योत्तमा के पिता की असमयिक मृत्यु हो गयी है जो कि बिजली विभाग में कर्मचारी थे। विद्योत्तमा की नौकरी पिता की मृत्यु से पहले लग चुकी थी। उसने पिताजी की ग्रैच्युटी और फंड वगैरह माँ के नाम फिक्स करवा दिया था और अपने वेतन से परिवार चलाने लगी थी। उसके परिवार में माँ के अलावा एक छोटा भाई व एक छोटी बहन भी थी। छोटी बहन की तो अभी दो वर्ष पहले ही लड़का ढूँढकर शादी कर दी थी , जबकि भाई बबलू प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा था। विद्योत्तमा की माँ विद्योत्तमा की शादी को लेकर बहुत चिंतित रहती है। समझाती भी है कि उम्र हो गयी है। उसकी माँ ने कई बार रिश्तों की बात भी चलाई मगर विद्योत्तमा ने अपने परिवार को पहले रखा। पहली प्राथमिकता विद्योत्तमा ने परिवार को दी, इसी बात से कोई रिश्ता नहीं बन पाया था। नारी का ऐसा समर्पण व त्याग की भावना उषा पियम्वदा के उपन्यास 'पचपन खंभे लाल दिवारे' मे नायिका सुषमा कभी है। सुषमा के संदर्भ मे डॉ विमलेश जी कहते है कि "उदाहरण के रूप मे हम कह सकते है कि 'पचपन खंभे लाल दिवारे' उपन्यास की सुषमा पारिवारिक जिम्मेदारियो के कारण ही अविवाहित रहती है। पक्षाघात से पीड़ित पिता के उतरदायित्व से वह चाहकर भी मुक्त नही हो पाती।"[4]

विद्योत्तमा की परेशानी यह है कि कार्यालय में उसकी ईमानदारी से लोग जलते हैं। कई तो उसे बदनाम करने के पीछे लगे रहते हैं। कुछ दिन से उसका नाम प्रशांत नाम के सहकर्मी के साथ जोड़ा जा रहा है। यह बात आज उसके घर तक आ गयी है। विद्योत्तमा की परेशानी यह है कि वह अपने छोटा भाई व माँ को कैसे बताए कि यह लांछन लगाया जा रहा है। यह मेरी ईमानदारी से जलने वालों की साजिश है। प्रशांत के साथ नाम जोड़कर मुझे बदनाम व परेशान किया जा रहा है और प्रशान्त की बीवी को बहकाया गया है इन्हीं भ्रष्टाचार की इच्छा रखने वाले आकाओं द्वारा।

दरअसल विभाग में सांस्कृतिक नाटक मंचन का कार्यक्रम था। जिसमें 'दमयंती' बनी विद्योत्तमा का 'नल' बने प्रशांत के साथ कुछ दृश्य चल रहा था, जिसमें एक दृश्य में दमयंती नल के हाथों में हाथ रखती है। इसी दृश्य पर प्रशांत की पत्नी अनीता को आपत्ति थी। उसी ने फोन करके विद्योत्तमा के घर में यह बातें बताईं और विद्योत्तमा की विश्वसनीयता पर संदेह दिया था।

यही वह बात थी जिसके कारण विद्योत्तमा ने अपना तबादला दूसरे विभाग में करा लिया है। ताकि विभाग के मतभेद और वैमनस्य घर तक न पहुँचे।

विद्योत्तमा कार्यालय में बैठी होती है तभी वहाँ उसकी कार्यालय की मित्र अपर्णा आ जाती है, जिससे विद्यात्तमा अपनी मानसिक उलझन बताती है। दोनों मित्र समस्या समाधान पर बात करते है।

विद्योत्तमा को कार्यालयी भ्रष्टाचार में शामिल न कर पाने से सारे सहकर्मी नाराज़ रहते थे जिसका कोपभाजन विद्योत्तमा को अकसर बनना पड़ता था। आखिर में विद्योत्तमा भी समझौता परस्त हो जाती है और इन्हीं भ्रष्टाचारियों के साथ सामंजस्य बिठाने को तैयार हो जाती है। उसे उम्मीद है कि कोई कालिदास आयेगा और उसे उस भीड़ में से निकालकर ले जायेगा।

3.1.4

कहानी संग्रह : 'वाया पांडेपुर चौराहा'

कहानी : 'हव्वा'

पात्र : नैना

'हव्वा' की कहानी आत्मकथात्मक शैली लिखी गयी है । इस कहानी की नायिका नैना है, जो कि कार्यालय में अधिकारी के पद पर है। लगभग सभी कार्यालयों में एक जैसा ही माहौल रहता है। हर कार्यालय मे महिलाओं के लिए भी समान वातावरण रहता है। लेखिका बताती है कि कार्यालयी जीवन शैली में महिला समुद्र के किनारे की तरह है जिसे समुद्र बार-बार छूने की कोशिश करता है। मतलब उसके सहकर्मी हमेशा उसको परेशान करना चाहते हैं। परन्तु वह अपना दामन बचाके चलती है। भारतीय समाज में यदि स्त्री का नाम किसी पुरुष के साथ जुड़ जाये तो सभी लोग नारी को हीन दृष्टि से देखते हैं। इन्हीं बातों से नैना परेशान रहती है और ऑफिस के अन्य कार्य भी परेशानी का कारण है।

नैना एक कामकाजी महिला व सफल गृहिणी भी है। उसकी जीवन शैली बहुत सरल है। सुबह किचन में अपने बच्चों व पति के लिए खाना पकाती है फिर दिनभर ऑफिस रहती है। शाम को फिर किचन में काम, पहले बच्चों को संभालती है फिर पति को भी समय देती है। इसी जीवन शैली से नैना की दुनिया चल रही है। या यूँ कहें कि नैना की जीवनशैली ऐसी है कि परिवार को अच्छे से सहेज रखा है। नैना की इस जीवन शैली व परिवार की अच्छे से परवाह करने पर लेखिका कहानी में औरतों के इसी गुण को बताती हुई कहती है कि-

"क्योंकि वह नारी है, धरती..। पूरी सृष्टि का बोझ उठाती धरती । आन्दोलन होने का तात्पर्य है स्खलन या दरार । वह कहीं दरार नहीं चाहती क्योंकि वह नारी है, स्खलन का अर्थ है स्वयं के अस्तित्व के टुकड़े । वह टुकड़े-टुकड़े अस्तित्व में नहीं जीना चाहती । एक मुकम्मल अस्तित्व के साथ वह भी दुनिया देखने की ललक रखती है ।"[5]

नैना ने अपना परिवार व नौकरी के बीच बहुत की अच्छा सामंजस्य बनाया है, वह पृथ्वी की तरह स्थिर है जिसके कारण परिस्थितियाँ अनुकूल चल रही हैं । वह पृथ्वी की तरह स्थिर तो है परन्तु ऑफिस सहकर्मी या अन्य उच्च व समकक्षी अधिकारी कर्मचारी समुद्र की तरह हैं । वे नैना रूपी किनारे को बार-बार छूना चाहते हैं । या किनारे तक पहुँचना चाहते हैं । जैसे राकेश ही को ले लो । वह बहाने करके साथ चाय पीना चाहता है और नैना को याद भी नहीं है कि राकेश उसके साथ कभी कॉलेज में भी था, परन्तु पूरे कार्यालय को पता है कि राकेश व नैना बचपन के दोस्त हैं । कार्यालय के बॉस हो या सभी इसी अन्धी दौड़ में शामिल हैं और नैना इनके अन्धेपन को नज़रअंदाज करती गांधारी । नैना की ही सहकर्मी है सुकल्पना जो कि कार्यालय चीफ की पत्नी है । इसलिए सभी सुकल्पना से दूर रहते हैं । जबकि सुकल्पना के पति फूलचन्द जी जो कि बॉस है, चीफ है, वे भी नैना पर मोहित है और बात-बात पर नैना से छेड़छाड़ भरी बातें करते है । एक दिन जब नैना ने छुट्टी ली थी तो फूलचन्द अपने दोस्त के साथ नैना के घर पर भी चले गये थे आतिथ्य सत्कार लेने के लिए, जो कि नैना के पति अरुण को बहुत खराब लगा था ।

नैना के एक वरिष्ठ सहकर्मी पवन हैं, जिससे नैना के पति के भी मित्रवत् संबंध हैं, नैना के पति अरुण पवन से ही नैना के प्रमोशन व कार्यालय की अन्य बातें करते हैं । नैना से भी पवन की गहरी मित्रता है । ऑफिस की समस्या को नैना पवन से ही चर्चा करती है, पवन हर समस्या में नैना का साथ देता है ।

बस एक दिन नैना अर्धनिद्रा में अरुण की बाँहों में पवन का नाम ले लेती है, तभी अरुण नैना के प्रति कुछ दुराव रख लेता है या गलतफहमी पाल लेता है।

3.1.5.

कहानी संग्रह : 'पथदंश'

कहानी : 'इसलिए भी'

पात्र : कमली

इस कहानी की नायिका कमली है जो पेशे से एक निम्न मध्यम वर्ग की कलाकार नृत्यांगना है जो ग्रामीण स्तर पर आयोजनों में नृत्य आदि करके अपना जीवनोत्पार्जन करती है । वह ग्रामीण स्तर के शादी समारोह में नृत्य आदि करती है। उसका स्वभाव अत्यंद संवेदनशील है । जिस बैंड पार्टी के साथ वह रहती है वह इन दिनों शादियों के सीज़न में बुकिंग में चल रही हैं । बैंड पार्टी की बुकिंग जहाँ होती है कमली भी वहीं साथ-साथ एक ही साधन से जाती है । उस बैंड पार्टी में कमली अकेली ही महिला प्रतिभागी है ।

कहानी के अनुसार कमली कुछ गलतफहमियों की वजह से किशोरावस्था में घर छोड़कर भाग गयी थी । वह अपने जीवनयापन के लिए छोटे-छोटे आयोजन में मनोरंजन करने वाली बैंड पार्टी में शामिल हो गयी । इस बैंड का प्रबंधन खादिम करता था । इन्हीं मियां खादिम की छत्रछाया में कमली रहती थी । खादिम की उम्र कमली से बहुत ज्यादा है । अतः कमली का और कोई न होने की वजह से खादिम ही सबकुछ है । कमली के द्वारा कमाए गये सारे पैसे का वही मालिक है । आज भी कमली को बैंड पार्टी के साथ एक शादी समारोह में जाना है । वह तैयार होकर खादिम के साथ निकली भी, तभी उसे खबर लगी कि आज का ठेका तो उसी कस्बे में है जहाँ कभी उसका घर हुआ करता था । जबसे वह घर

से भागी थी वह अपने कस्बे में दुबारा वापस नहीं गयी है। जहाँ उसके माता-पिता के साथ पूरा परिवार है। वह घर से भागी थी क्योंकि कमली की माँ जिससे शादी के लिए कह रही थी वह कमली को पसंद नहीं था। कमली को जो पसंद था वह लल्लन था। लल्लन अनाथ था इसलिए कमली की माँ को वह पसंद नहीं था। कमली की माँ कमली को डाँटने फटकारने लगी। शादी करने की बात बार-बार करने लगी थी, वो भी कतवारु के बेटे से। वह कतवारु जो खुद कमली पर गन्दी नजर रखता है। कई बार वह खुद भीड़ का फायदा उठाकर कमली के पास आकर बुरी नजरों से देखता व छूने की कोशिश करता था। कतवारु व कमली की एक बार लड़ाई भी हो गयी थी क्योंकि वह भीड़ का फायदा उठाकर कमली को गलत तरीके से छू रहा था। इन्हीं सब बातों की वजह से कमली कतवारु व उसके परिवार को पसन्द नहीं करती थी। जबकि कतवारु को उसकी माँ बहुत पसन्द करती थी व कमली की शादी कतवारु के बेटे से करवाना चाहती थी।

कमली लल्लन को पसन्द करती थी परंतु उसकी माँ कमली की शादी लल्लन से करने के लिए तैयार नहीं थी। कमली के घर छोड़ने का कारण कुछ गलतफहमी है जो बाद में पता चलती है कि यह तो लड़कियों के शारीरिक की प्राकृति अनियमितता सामान्य समस्या है।

परन्तु कहानी में आज बैंड वहाँ जा रहा है जहाँ पर कमली का घर था। उसके माँ व पिता आदि थे व कमली का प्यार लल्लन भी वही था। कमली को उलझन यही है कि उसके परिवार वाले क्या सोचेंगे ? लल्लन दिखेगा क्या ? उसके मन में यही खयाल चल रहे है कि वह सबका सामना कैसे करेगी। क्या लल्लन अभी भी उसका इंतजार कर रहा होगा। माँ उसे देखकर क्या सोचेगी। क्या माँ की इज्जत, मरजाद मुझे नाचते हुए देखकर रहेगी या चली जायेगी। अन्य परिचय वाले क्या सोचेंगे इसी उलझन में है कमली। कमली को पता होता तो वह आज का ठेका मना कर देती। परन्तु अब फैजाबाद के मनकापुर के क्षेत्र में उसे जाना ही पड़ेगा।

कमली शादी में नृत्य के लिए जाती है जहाँ पर वह शादी की भीड़ में नृत्य भी करती है । उसका पुराना प्यार जिसे वह इज्जत व मरजाद के नाम पर छोड़ आयी थी, लल्लन भी दिखा, परंतु लल्लन कमली को नृत्य करते देख बिजलीयुक्त तार को पकड़कर आत्महत्या कर लेता है । कमली की माँ कमली को पा कर खुश होती है और अपने घर ले जाने की जिद करती है ।

3.1.6.

कहानी संग्रह : 'पथदंश'

कहानी : 'तूफान आने वाला है'

पात्र : सीमा

यह कहानी पति-पत्नि रंजन व सीमा की है । पूरी कहानी सीमा के पिछले जीवन से सम्बन्धित है । यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में है जिसमें सीमा अपने व्यतीत जीवन की दशा को पति रंजन से बताती है कि कैसे गरीब औरतों पर पितृसत्ता के द्वारा अन्याय होता है । वह अपनी माँ की कहानी बताती है कि कैसे गरीब परिवार की महिलाओं पर मर्दवादी सोच के लोगों द्वारा अन्याय किया जाता है । उसका बाहरी दुनिया से संपर्क न के बराबर होता है जिससे अपनी दुनिया के बाहर की दुनिया का कोई आसरा नहीं रहता है । सीमा नाम की नायिका एक खास वर्ग या अल्पसंख्यक वर्ग की है जो अब नाम बदलकर सीमा हो गयी है । वह उस वर्ग की गरीब महिलाओं की दशा या दुर्दशा में रहन-सहन व जीवन-यापन की बातें बताती है ।

वह रंजन को बताती है कि मां कैसे-कैसे गरीबी में 6 छोटे-छोटे बच्चों का पालन पोषण करती है । फिर भी पिताजी की तरफ से माँ अपराधी ही लगती थी। बड़े परिश्रम से

देखभाल करती थी। वह परिवार का सुबह से लेकर रात तक घर के कार्य करती थी और दुर्दशा सहती थी। कभी माँ यदि कुछ गृहस्थी के लिए सामान लाने को बोले या बच्चों के लिए दवा लाने बोलती भी तो उनके इस अपराध की सजा भी मिल जाती थी। उसका पति रंजन कहता है कि दुनिया में समाज में औरतों पर अत्याचार होते रहते हैं। इन बातों को भूल जाओ तब सीमा कहती है कि नहीं, मैं उसे भुलाना नहीं चाहती बल्कि और याद रखना चाहती हूँ क्योंकि मुझे उन परम्पराओं को बदलना है।

"नहीं, मुझे मेरा अतीत भुलाने को कभी न कहना रंजन! बल्कि तुमसे मेरी यही विनती है कि मुझे हर दिन उसे याद दिलाते रहना। .. एक पल के लिए भी मैं उसे विस्मृत नहीं करना चाहती, क्योंकि उसके साथ जुड़ा है मेरा जीवन और मेरी जाति का लक्ष्य। मैं तुम्हारी ऋणी हूँ रंजन कि मेरी लक्ष्य-साधना में तुम मेरे अभिन्न सहयोगी ।"[6]

पितृ सत्तात्मक सोच में परिवर्तन लाने के लिए हर नारी को ऐसे ही लक्ष्य-साधन का यत्न करना चाहिए। तदुपरांत रंजन कहता है कि तुम ऐसी-वैसी बातें न करो। तुम्हारे गर्भ में जो बेटा है उस पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। इस पर वह कहती है कि पितृसत्ता किसी बच्चे को अपने हिसाब से न देखे। मैं अपनी कोख में एक और पितृसत्ता को जन्म नहीं देना चाहती क्योंकि इसी पितृसत्तात्मक सोच के कारण ही धर्म जाति के इतर भी स्त्री-पुरुष में समानता स्थापित नहीं हो रही।

कहानी की नायिका सीमा बताती है कि मुस्लिम समाज में नारियों की दशा बहुत खराब है जैसे कि अधिक बच्चे होने से कई तरह की कमजोरी और बीमारियों की शिकार हो जाती हैं, अधिक बच्चे पैदा होंगे तो शरीर भी जल्द ढल जायेगा, फिर पुरुष दूसरी शादी करेगा, फिर तीसरी, परिवार बढ़ता जायेगा, आमदनी कम रहेगी। महिलाओं का जीवन स्तर निम्न से निम्न हो जायेगा। इतना होने पर भी पुरुष खुद को सम्मानजनक मानते हैं। ऐसा करने से दुनिया का कोई कानून इन्हें रोक नहीं सकता है और न ही पुरुषों को इस

पर कोई शर्म भी आती है। कहानी में कई बार विवाह को मृत आत्मा का कार्य बताया गया है।

फिर नायिका बताती है कि विवाह के उपरान्त अपने परिवार में कुछ मान्यताओं व कुरीतियों पर आपत्ति की तो पूरा परिवार समाज, धर्म पर बोलने पर नायिका के खिलाफ हो गया। उसे अपने समाज से, धर्म से अलग होना पड़ा। इस विपत्ति काल में रंजन उसे स्वीकार करता है। नायिका सीमा अपने घर की रुढ़िग्रस्तता के बारे में बताती है कि- "हमारा तो इतिहास भी वही वर्तमान भी वही है। कोई भी परिवर्तन, धर्म विरोधी बातें, ऐसी बात नहीं है कि परिवर्तन एकदम शून्य है, परन्तु वही, जहाँ पितृसत्ता को अपनी सुविधा में कोई अड़चन आयी, मातृसत्ता जहाँ थी, वहीं है। महत्त्वहीन अस्मिता और अस्तित्वहीन।"[7]

उसके बाद रंजन सीमा को मंदिर लेकर जाता है। जहाँ जाने से सीमा परहेज करती है क्योंकि उसके धर्म समाज में तो महिलाएँ धार्मिक कार्यों से अलग रहती हैं। परंतु मंदिर में जा कर जल अर्पित किया, शिवशक्ति, राधाकृष्ण, राम व सीता की युगलमूर्ती देखी और पुजारी से आशीर्वाद प्राप्त किया। यह सब दूसरे धर्म से आयी सीमा को अद्‌भुत अनुभव लगा। उसे एहसास हो रहा है कि दोनों धर्मों में कितना अन्तर है। उसका मन सुखद संतोष से भर जाता है।

नायिका दोनों धर्मों में महिलाओं की स्थिति पर तुलना करती है जिसमें बहुत ही असमानताएँ हैं। उसे एहसास होता है कि हमारे समाज के लोगों की पितृसत्ता की खुमारी में महिलाएँ मकान व दिवाल की तरह हो गयी हैं। सिर्फ भोग-विलास की सामग्री से अधिक कोई और महत्त्व नहीं है। और जरा भी परिवर्तन करने को कहो तो स्त्री मुक्ति व रहन-सहन, रीति-रिवाज के बीच में धर्म को ला देते हैं। इसलिए इसे तोड़ना मुश्किल होता जा रहा है। और नायिका कहती है कि मैं अपनी जड़ों को छोड़ना नहीं चाहती। उसी में रहकर उसे परिवर्तित करना चाहती हूँ। उसे छोड़ना नहीं चाहती। और अन्त में वह नारी

स्थिति में परिवर्तन लाने को कृतसंकल्प होती है। उसी आनेवाले परिवर्तन की फैन्टेसी के रुप में वह कहती है कि अब तूफान आने वाला है।

3.1.7.

कहानी संग्रह : 'अभी ठहरो अंधी सदी'

कहानी : 'लड़ाई जारी है'

पात्र : नवनीता

प्रस्तुत कहानी की नायिका नवनीता है जो कि एक पत्रकार है। इस कहानी में स्त्री मुक्ति का यथार्थपरक चित्र प्रस्तुत किया है। यह कहानी आत्मकथात्मक रुप से चलती है। नवनीता बताती है कि शहर निवासी भले ही घनत्व की दृष्टि से पास-पास रहते हों परन्तु आपसमें दूरियाँ बहुत रहती हैं। नवनीता बताती है कि आसपास कितनी भी गम्भीर घटना हो जाये कोई साथ देने वाला नहीं है। जल्द ही एक बच्चे की ईंट से मार-मार कर हत्या कर दी गयी और मुहल्ले में अपने बीमार माँ-बाप को लेकर रहने वाली लड़की का बलात्कार हो जाता है। परन्तु मुहल्ले में रहने वाले गूँगे बहरों को पर कोई असर ही नहीं पड़ता है। कमोबेश सभी घरों का यही हाल है। नवनीता स्वयं के घर वालों की प्रतिक्रिया बताती है कि जब लड़की का बलात्कार हुआ तो मैं पत्रकारिता करने उस घर गयी थी जिस घर की लड़की का बलात्कार हुआ था तो घर पर बहुत डाँट पड़ी थी।

"बहुत ज्यादा मन न बढ़ाओ नवनीता। हमने छूट दी है तो लगाम खींचना भी जानते हैं। लड़की हो, लड़की की सीमा में रहो।"[8]

नवनीता बताती है कि जब प्रशासन ही सहयोग नहीं करे तो किसी घटना में पत्रकार व अन्य लोग क्या कर सकते हैं।

फिर वह कहानी बताती है उस अम्मा की जो उसी मुहल्ले में रहती है, जिनकी एक बेटी है, बहू है, बेटा जो अम्मा के स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण डिप्टी एस.पी. बन गया है। नवनीता बताती है कि भले ही अम्मा ने स्वतंत्रता के समय संघर्ष किया, जेल की सजा काटी। अम्मा के पिता भी आज़ादी की लड़ाई में स्वतंत्रता सेनानी थे। तब के समय में महिलाओं को कोई महत्त्व नहीं देता था। अम्मा बताती है कि जेल की सजा काटने के बाद जब वापस आयी तो मेरे ससुराल वाले मुझसे गौना के लिए तैयार नहीं हुए। मेरी तो छुट्टा-छुट्टी की बातें होने लगी। फिर किसी तरह से मेरे पिताजी ने स्थिति स्पष्ट की तब मेरा गौना हो पाया। तब नारियों की ऐसी स्थिति थी। नवनीता बताती है कि आज़ादी के पचास वर्षों बाद भी नारी को कोई विशेष महत्त्व नहीं मिला है। तब भी नारी का अस्तित्व दुनिया, समाज, इज्जत आदि के बाद आता था। अब भी जैसे अम्मा की बेटी पढ़ाई करना चाहती थी, नहीं कर पायी व अम्मा की बहु नौकरी करना चाहती थी, नहीं कर पायी। स्त्री मुक्ति तब भी जरुरी थी अब भी जरुरी है। नवनीता पत्रकारिता की पढ़ाई करके पत्रकारिता कर रही है परंतु घर से उसे किसी विवादित कार्य में शामिल नहीं होने दिया जाता है।

नवनीता अम्मा से आज़ादी के बारे में पूछती है। क्या घटना घटी थी, तब अम्मा जी कहती हैं कि उस समय क्रांतिकारियों में महिलाओं को शामिल नहीं करते थे। उस घटना के बारे में अम्मा बताती है कि गाँव में गन्ने के खेत में सभी क्रान्तिकारी छिपे हुए थे जिसमें पिताजी भी थी। पुलिस ने गन्ने के खेत को चारों तरफ से घेर रखा था। मैं पन्द्रह साल की थी। गन्ने के खेत में शौच के बहाने जाकर सबको पानी और खाने के साथ बाहर की खबर भी दे आती थी। एक बार पुलिस वालों ने मेरी तलाशी ली। मुझे कई हन्टर मारे भी थे। देखते-देखते गन्ने के खेत में आग लगा दी गयी। सभी लोगों को पुलिस वालों ने बंदूक की नोक पर पकड़कर मुझे भी साथ लेजाकर जेल में डाल दिया। छः महीने तक जेल में रही थी।

अम्मा आगे बताती है कि जेल से छूटने के बाद मुझे लोग अच्छी नजर से नहीं देखते थे। मेरी शादी हो गयी थी, ससुराल वाले गौने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। पिताजी के विशेष अनुनय-विनय करने पर मेरा गौना हो पाया था। तब की नारियों का महत्त्व बहुत कम था। अम्मा आगे बताती है कि तब और अब में कुछ मामूली-सा परिवर्तन हुआ है। परन्तु यह कहना है कि "अभी लड़ाई जारी है।"

3.1.8.

कहानी संग्रह : 'अभी ठहरो अंधी सदी'

कहानी : 'एरियर'

पात्र : रेनू

रेनू मध्यवर्गीय परिवार की गृहिणी है। उसके पति अशोक हैं जो एक कार्यालय में सरकारी मुलाजिम है। अशोक को नौकरी करते हुए सात साल हो गये हैं। उसकी दो बेटियाँ व एक बेटा है। अशोक के भैया-भाभी व माता-पिता सब साथ में ही रहते हैं। अशोक के भैया गाँव में ही अध्यापक है। एक दिन परिवार में कुछ विवाद होने पर अशोक के पिता ने अशोक को सलाह दी कि दोनों भाई में मतभेद होने से अच्छा है कि तुम शहर में रहो। इससे दोनों में झगड़े भी नहीं होंगे व आपस का प्रेम भी बना रहेगा। तब से अशोक शहर में ही अपने परिवार के साथ रहता है। उसके बच्चे भी बड़े हो गये हैं। शहर में उससे मिलने हर महीने पिताजी आते थे। अशोक की पत्नी रेनू जो अत्यन्त ही सरल, सहज, ईमानदार, सुशिक्षित गृहिणी है, जो बच्चों, पति व घर को बखूबी संभालती है। वह बहुत ही समझदार व जागरुक महिला है। उसमें आदर्श नारी के गुण हैं, अपने अधिकारों के लिए सजग रहने वाली है। जब भी एक नारी की अस्मिता पर चोट होती है वह उसका प्रतिकार जरुर करती है। वह चाहती थी कि शादी के बाद नौकरी करे। अपनी शिक्षा का उपयोग करे परन्तु घरवालों ने उसे इसकी इजाजत नहीं दी थी। इसी तरह की मजबूरियाँ समाज

के हर परिवार में हर लड़की के साथ घटित होती है। अतः यदि स्त्रियों को मुक्ति चाहिए तो निश्चय ही अपने अधिकारों व अवसरों की प्राप्त के लिए जागरुक रहना पड़ेगा।

"अपनी बात अधूरी ही छोड़ हँस पड़ी थी रेनू। उसकी हँसी में एक कसक थी ।

आज भी सोचती हूँ तो कोफ्त होती है कि उस समय जरा-सा विरोध कर लेती तुम्हारे भइया-भाभी की मनाही का और अपनी पढ़ाई पूरी कर लेती तो आज मैं भी तुम्हारा हाथ बँटा सकती थी। इतना भार अकेले तुम्हारे कन्धों पर तो न होता।"

कोई बात नहीं! तुम सोच रही हो मेरे भार के बारे में, मेरे लिए यही पर्याप्त है।"[9]

यह नायिका रेनू की बात है। उसकी सोच एक जागरुक महिला की सोच है। आज की नारियों के लिए आदर्श है। ऐसी ही जागरुकता यदि भारत की सभी नारियों में हो जाये तो नारी मुक्ति का आन्दोलन सफल होने से कोई नहीं रोक सकता है। हर स्त्री को अपने निर्णय खुद लेने चाहिए। यदि कुछ भी अनुचित लगे तो उसका प्रतिकार करना चाहिए। नारियों में प्रतिकार होने चाहिए। गलत से इन्कार व सही को स्वीकार करना चाहिए चाहे नारी पिता के पास हो, पति के पास हो या फिर समाज के बीच में। अपनी राय अपना मत हमेशा रखना चाहिए, संकोच नहीं करना चाहिए और समाज के किसी भी वर्ग या इकाई को स्त्रियों की अभिव्यक्ति में बाधा नहीं पहुँचानी चाहिए।

"प्रतिरोध के कई बिन्दु हैं। सबसे पहले विरोध का स्वर परिवार के प्रति दिखाई देता है। स्त्री की सबसे बड़ी ताकत, सुरक्षा और अधिकार तंत्र वहीं विकसित होता है। स्त्री पहले माता-पिता के सामने दबे स्वर में बोलती है, फिर पति के सामने और फिर समाज के सामने। अपनी इच्छाओं की अभिव्यक्ति वह बहुत संकोच से करती है। कई बार दबाव, अनावश्यक रोक-टोक, विसंगत स्थितियाँ और परिस्थितियाँ भी स्त्री को बगावत करने के लिए प्रेरित करती हैं।"[10]

पुरुषों को चाहिए कि स्त्री की अभिव्यक्ति को महत्त्वपूर्ण मानें । जैसे रेनू ने अपने परिवार में रहकर इतनी अच्छी परवरिश का उदाहरण दिया, क्योंकि शिक्षा लेने से सही व गलत का अन्तर पता चल जाता है । कहानी में यह होता है कि दोनों भाइयों में मनमुटाव होने लगता है । अशोक का मन था कि बिके हुए पेड़ का पैसा बाबूजी को दे देते हैं, जबकि बड़े भाई का मन था कि नहीं अभी लगान बाकी है उसे दे देते हैं । इस विवाद का रास्ता यह निकलता है कि बाबूजी के कहने पर उस पैसे से एक भैंस खरीद लाते है, क्योंकि घर में दूध की कमी रहती है ।

रेनू को पति से आश्वासन मिलता है कि ऑफिस से एरियर मिलने वाला है उसमें कुछ पैसों से सोने की जंजीर बनवा दूँगा । इस पर रेनू एक आदर्श गृहिणी की तरह कहती है कि- घर में और भी खर्च हैं । घर में दरवाजा लगाने की व आपकी मोपेड पुरानी हो गयी है, नयी मोपेड ले लो । रेनू के परिवार के प्रति इतने प्रेम को देखकर रेनू के पति अशोक कहते हैं कि- "दस दिनों बाद मैं तुम्हारे हाथ पर रुपये लाकर रख दूँगा, फिर मेरी तो छुट्टी । बाकी सिरदर्द तुम्हारा।"

रेनू पैसे को लेकर सोचती है कि - "नहीं । सोच रही हूँ कि बाबूजी जीवित रहते तो...। इस समय हाथ में पैसे थे, उन्हें मैं चारों धाम का दर्शन करा लाती । उनकी बड़ी इच्छा थी जाने की ।"[11]

आदर्श नारी का सबसे अच्छा उदाहरण तब देखने को मिलता है जब एरियर आता है और घर में पैसे आते हैं, वो भी उम्मीद से आधे ही । उसी समय मृत पिता की पुण्यतिथि आ जाती है जिसमें एरियर के पैसे भी कम पड़ रहे होते हैं । तब रेनूने जो अपने पास जंजीर बनवाने के एडवांस पैसे रखे थे उसको लाती है । तब जाकर पुण्यतिथि का खर्च हो पाता है ।

3.1.9.

कहानी संग्रह : 'अभी ठहरो अन्धी सदी'

कहानी : 'देश के लिए'

पात्र : भारती

जम्मू में भारती नाम से एक वेश्या है जो अपने धंधे से जो कमाई होती है, उन पैसों से वह ढेर सारे रेशम खरीदती है। क्योंकि उसे देश की सरहद पर लगे हुए सैनिकों के लिए राखी बनानी है। हर साल वह रक्षाबंधन को भारत की सीमा पर तैनात सैनिकों को राखी भेजती है। वह राखी भेजने वाले का पता नहीं भेजती थी, सिर्फ 'भारती' ही लिखती थी।

नीरजा माधव की इस कहानी में नायिका का नाम बहुत स्पष्ट नहीं है। क्योंकि वह वेश्या है, वेश्याएँ अपना असली नाम नहीं बताती हैं। वह कभी तरन्नुम बताती है तो कभी संगीता बताती है। परन्तु सैनिकों को राखी वह 'भारती' के नाम से भेजती है।

एक दिन एक ग्राहक उसके पास आता है जो रातभर नायिका के पास रहता है। उस ग्राहक को बाद में पता चलता है कि जो दलाल मुझे इस वेश्या तक लाया है वह 16 वर्ष का लड़का तो इसी वेश्या का बेटा है। इस बात से वह ग्राहक बहुत ही आहत हो जाता है। वह वेश्या से रातभर बात करता रहता है। जबकि वह अपने ग्राहक को कई बार बातें करने को मना करती हुई कहती है कि जिस काम के लिए आए हो वह काम करो। परन्तु वह ग्राहक उससे उसकी निजी जिंदगी के बारे में बार-बार पूछता रहा और धीरे-धीरे वह सब बातें बताती गयी।

वह बताती है कि उसके पिता उसकी शादी से पहले ही मर गये और माँ तो बचपन में ही मर गयी थी। मेरे मामा ने मेरी शादी की। उसके ससुराल में साड़ियाँ बीनने व जरी का काम होता था। उसके पति अधेड़ उम्र के थे, पहली पत्नी मर गयी थी। दूसरी बीमार रहती है। घर में करघे पर हाथ बँटाने वाला चाहिए। इसीलिए उसने इतनी शादियाँ

की थी। उसका पति अपनी पत्नी व बच्चे का थोड़ा भी सम्मान नहीं करता था। दोनों को छोटी-छोटी गलती पर मारता-पीटता था। अपने पति का घर छोड़कर वह जम्मू आयी थी। क्योंकि उसका पति जरी व साड़ियों के साथ भारत देश की गुप्त सूचना चोरी-चोरी अन्य देशों के माध्यम से पाकिस्तान को देता था। अपने पति के इसी कारनामे की सूचना उसने रक्षा मंत्रालय को दी थी , जिसके बाद उसके पति की गिरफ्तारी हो गयी। वह वहाँ से भागकर जम्मू आ गयी। यहाँ वह वेश्यावृत्ति के धंधे में रहकर जीविकोपार्जन करती और बचे हुए पैसों से रक्षाबंधन के समय सीमा पर भारतीय जवानों के लिए राखियाँ बनाती है। राखियाँ बड़ी मात्रा में बनाती है। इसके लिए उसे ढेर सारा रेशम खरीदना पड़ता है। वह अपने पास आये ग्राहक से बात करती है। नायिका ने बताया कि वह अपने बेटे को भारतीय सेना में भर्ती कराना चाहती है। इस बात पर राकेश चौंक जाता है कि मेरे सेना में कैप्टन होने की बात खुल न जाये। क्योंकि वह एक अपराध की सजा झेल रहा है। कहीं एक और अपराध न हो जाये, वह भी एक औरत के सामने। वह शर्मिंदा नहीं होना चाहता। वही नहीं, कोई भी पुरुष एक औरत के सामने अपराधी नहीं बनना चाहता है। यह पितृसत्तात्मक सोच का एक उदाहरण है कि पुरुष कभी भी एक महिला के सामने कमजोर नहीं होना चाहता है। इस बात को लेखिका नीरजा माधव की इन पंक्तियों से स्पष्ट किया जा सकता है।

"यह युवती उसकी असलियत नहीं जाने तो अच्छा है। पुरुष सारे अपमान सह सकने की क्षमता रखता है परन्तु किसी स्त्री की निगाह में कायर या कमजोर सिद्ध होना उसके लिए मौत से भी बदतर है।"[12]

नायिका अपने बेटे के बारे में बताती है कि हम माता-पुत्र बहुत ही डर कर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। क्योंकि कुछ दिन पहले ही पति इसी मुहल्ले में घूम रहा था दो-तीन लोगों के साथ। वह यह भी बताती है कि पिता-पुत्र दोनों एक दूसरे को नहीं पहचानते हैं। क्योंकि बीच में काफी समय निकल गया है। इसीलिए मैं दिन में धंधा नहीं करती हूँ।

नायिका बताती है कि यह जो राखियाँ मैं बनाती हूँ वह हमारे जो भाई सेना में हैं उनके लिए है। ऐसा मैं हर साल करती हूँ। नायक पूछता है कि किस नाम से भेजती हो सैनिकों को राखियाँ, तो वह बताती है कि 'भारती' नाम से। यह नाम राकेश को सुना हुआ लग रहा था। तब वह याद करता है कि कभी कमान्डिंग आफिसर की आवाज़.... "जवानों, पिछले कई वर्षों की भाँति आज रक्षाबंधन पर मिली राखियाँ हमें हमारी एक प्यारी बहन भारती को, जिसे हमने देखो तो नहीं, और न ही वह अपना पता भेजती है, पर हम सैनिक भाइयों का स्नेह और आशीर्वाद हमेशा उसके साथ रहेगा,.... यदि किसी जवान को राखी नहीं मिल पाती है तो वह दूसरे जवान की राखी में से कुछ धागे लेकर अपनी कलाई पर अवश्य बाँधे क्योंकि शायद हमारी उस बहन को हमारी निश्चित संख्या का ज्ञान नहीं होगा।"[13]

राकेश को अपनी कई सालों की नौकरी में ऐसा बार-बार हुआ था। इतनी राखियाँ बनाने में कितना रेशम लगता होगा। इन सब खर्च का जिम्मेदार कौन है? क्या वो आपके भाई हैं क्या? राकेश ऐसा पूछता है तो नायिका बताती है कि नहीं, इस स्थिति के जिम्मेदार भाई नहीं बल्कि एक देशद्रोही से शादी कर ली थी, उसी की सजा में यह हालत हुई है।

यह सब बातें सुनकर राकेश विक्षिप्त हो गया था। वह अपने आपको धिक्कार रहा था। फिर वह नायिका को बोलता है कि तुम जाओ, अपने बच्चे के पास। मैं अब चला जाऊँगा।

फिर कुछ दिन बाद नायिका को सुबह अखबार में उसी युवक की फोटो दिखती है कि वह सेना में कैप्टन था जो आज शहीद हो गया और अपनी वसीयत लिखता है जो कि रक्षा मंत्रालय में जमा कर दी गयी है। अन्य सूत्रों से खबर है कि शहीद होने से कुछ दिन पहले ही राकेश ने अपनी वसीयत बनाई थी जिसमें लिखा था की मेरी सम्पत्ति मेरी मुँहबोली बहन भारती को दे दी जाये और मेरे स्थान पर उसके बेटे को नौकरी दी जाये।

यह सब पढ़कर भारती ने उसी तस्वीर वाले अखबार पर जो राखियाँ वह बना रही थी, बिछा दीं और उसी पर सिर टिका कर फफक रही थी।

3.1.10.

कहानी संग्रह : 'प्रेम सम्बन्धों की अन्य कहानियाँ'

कहानी : 'वह नहीं तो यह'

पात्र : संध्या

कहानी 'वह नहीं तो यह' की मुख्य पात्र है संध्या जो कि उच्च शिक्षित सरकारी सेवा में कार्यरत है। डॉ. संध्या सक्सेना सदर में एस.डी.एम. है। नायिका संध्या का संघर्ष, स्त्री स्वाभिमान व स्त्री मुक्ति का संघर्ष है। नायिका संध्या समाज की उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जो पितृसत्तात्मक समाज की परम्परागत व दूषित मानसिकता के कारण परेशान होती हैं और जिन्हें अपनी पहचान बनाने में बाधा उत्पन्न होती है। लेखिका नीरजा माधव ने 'वह नहीं तो यह' कहानी के माध्यम से नारी जगत को एक प्रेरणादायी मार्ग दिखाने के लिए संध्या का ताना-बाना बुना है।

इस कहानी में नायिका संध्या की कॉलेज मित्र कुमुद तहसील ऑफिस में मिलने आती है। संध्या सदर तहसील में एस.डी.एम. पद पर है। उसकी कार्यशैली देखकर कुमुद को अटपटा लगता है कि संध्या शादीशुदा है व इतने उच्च पद पर रहकर भी इतने गुस्से में क्यों रहती है। दोनों मिलते हैं और संध्या कुमुद को रविवार को घर पर चाय के लिए बुलाती है।

कुमुद सपरिवार संध्या के घर जाती है। कुमुद के पति खाना खाकर अपने दोस्त के घर चले जाते हैं व कुमुद का बच्चा सो जाता है। तब दोनों मिलकर अपने जीवन

संघर्ष की बातें करती हैं जिन बातों के माध्यम से लेखिका ने नारी जगत के संघर्ष की व्यथा का एक बानगी परिचय दिया है।

कुमुद संध्या के पिछले जीवन की बातें पूछना चाहती है तो संध्या कहती है कि- "तुझे कुछ पूछने की जरुरत नहीं है। मैं स्वयं ही बताना चाहती हूँ। आज तक मेरा बाह्य रुप ही सब देखते रहे हैं। एस.डी.एम. का मुखौटा पहने-पहने संध्या का असली चेहरा किसी को दिखाई पड़ना संभव ही नहीं है, क्योंकि इस मुखौटे को मैं उस समय उतारती हूँ जब सभी नौकर जा चुके होते हैं और रात के सन्नाटे में मेरी सिसकियाँ किसी को सुनाई नहीं पड़ सकती है। अब लगता है कि यदि तुमसे भी नहीं बताऊँगी तो मैं पागल हो जाऊँगी।"[14]

संध्या कुमुद को बताती है कि उसके पति आनन्ददेव जो कि नगर निगम में अकाउन्टेन्ट हैं, उनको मेरा प्रशासनिक सेवा का आकर्षण पसन्द नहीं था। वो कहते थे कि मैं नौकरी में हूँ तो तुम्हें नौकरी करने की क्या जरुरत है। मेरे परिवार में कभी किसी महिला ने नौकरी नहीं की है। अतः तुम्हें भी नौकरी नहीं करनी चाहिए। इन सब बातों पर संध्या अपने पति को बार-बार समझाती थी कि मेरी दादी ने कभी नौकरी नहीं की है तो क्या मैं भी उन्हीं की तरह रहूँ, क्यों? मनुष्य को समझ बढ़ने पर ज्ञान का विस्तार होता है तो उसका जीवन स्तर भी ऊच्च होता है, रहन-सहन आदि बदल जाता है, सुधार होता है। और यदि मेरी नौकरी प्रशासनिक विभाग में लगी तो वहीं पर आपका भी तबादला कराकर साथ-साथ रहेंगे। संध्या के बार-बार समझाने पर भी आनन्ददेव तैयार नहीं हुए थे, क्योंकि आनन्ददेव पितृसत्तात्मक विचारों से पोषित मानसिकता के थे। उन्हें नारियों की अलग पहचान व परम्परा से हटकर कुछ करना पसन्द नहीं था।

संध्या आगे बताती है कि मेरी नौकरी प्रशासनिक सेवा में लग गयी। मेरे पति खुश नहीं थे। फिर भी उदास मन से मैं ट्रेनिंग में गयी। आनन्ददेव अपना ट्रान्सफर करवाने के लिए तैयार नहीं हुए और मैंने भी अपनी पोस्टिंग लखनऊ में ही करवा ली। संध्या बताती

है कि मेरे पति सरकारी क्वार्टर में भी जाने के लिए तैयार नहीं हुए। मैंने बहुत कहा उन्हें। उन्होंने सरकारी क्वार्टर में न जाने का कितना छोटा तर्क दिया था।

"इस किराए के फ्लैट में इतने दिनों से रह रहा हूँ इसलिए इसे छोड़ने का मन नहीं है। तुम्हें उचित लगे तो तुम भी यहीं रहो।"

मैंने भी हँसकर पूछा था- "और इतने वर्ष पहले आपने जिसके साथ जीवन बिताने का अग्नि के सम्मुख वचन लिया, वह किराए के फ्लैट से भी गया गुजरा हो गया?"

"क्या पत्नी के टुकड़ों पर पलने वाला पति मुझे बनाना चाहती हो?" आनन्ददेव चीख पड़े थे। मैं भौंचक्की सी उनका मुँह देख रही थी। कब इस तरह की खाई हम दोनों के बीच बन गयी इसका एहसास भी नहीं हुआ मुझे।

मन की टीस आँसू बन आँखों से वह निकली थी। आनन्ददेव बिना कुछ बोले उठकर दूसरे कमरे में चले गये थे।"[15]

सच है कि पितृसत्तात्मक सोच से पोषित मानसिकता के लोग चाहे नर हो या नारी, किसी को भी परम्परा से अलग कुछ भी मंजूर नहीं है। इस कहानी में आनन्ददेव इसी विचार के लगते है। उनकी परेशानी है कि पत्नी नौकरी करेगी तो उसी को घर का मुखिया माना जायेगा। औरतों की अपनी पहचान होती है ये सब बातें आनन्ददेव को पसन्द नहीं थी। संध्या बताती है कि बेटे गौरव के जन्मदिन पर सभी मेहमानों के सामने बहुत कहने पर ही आनन्ददेव गये थे। वो भी कुछ देर ही, क्योंकि जल्द ही नौकर ने संध्या को बताया कि साहब बाज़ार की ओर गये है। पार्टी खत्म होने के काफी देर बाद ही आनन्ददेव लड़खड़ाते हुए देर रात घर आये। उस रात पहली बार वो नशे में दिखे थे। न जाने ऐसा लग रहा है कि ये अंदर ही अंदर टूटते जा रहे है। जब कि कितनी स्वाभाविक-सी बात है कि पति/पत्नि में से किसी की भी नौकरी बड़ी हो, परन्तु यह बात आनन्ददेव नहीं समझ रहे

हैं। वो पत्नी के सामने नीचा नहीं दिखना चाहते। संध्या बताती है कि तभी से हम दोनों पति-पत्नी में दूरियाँ बढ़ने लगीं।

संध्या अपने घर में घटित एक और घटना के बारे में बताती है कि एक दिन ऑफिस से आने के बाद मैं बाहर ही बैठकर अपने खुले बालों के साथ कुर्सी पर अधलेटी जैसी थी तभी अचानक से डी.एम. साहब आ धमके। मुझे ऐसे खुले बालों के साथ देखकर वे मेरी व मेरे बालों की खूबसूरती की तारीफ करने लगे। ये बातें आनन्द को अच्छी नहीं लगीं। उस दिन आनन्द ने हमसे कोई बात नहीं की। उस रात भी वो नशे में ही घर लौटे थे। ये अब तो रोज-रोज का हो गया है। इन सभी बातों को याद करके संध्या बहुत परेशान हो जाती है जिस पर कुमुद कहती है कि दीदी, सारी बातें कह डालिए। आपका भी मन हल्का हो जायेगा।

संध्या आगे बताती है कि एक दिन रात में मेरे पतिदेव ने मेरे सो जाने के बाद मेरे बालों को काट दिया। उनको मेरे बालों से इतनी जलन हो गयी थी, जबकि वे मेरे इन्हीं बालों की तारीफ शादी के बाद बहुत करते थे, जिसको इन्होंने रात में काट दिया था। आनन्ददेव इतने कुण्ठाग्रस्त हो गये थे कि बाल काटने की वजह जब संध्याने पूछी तो गुस्से बोलते हैं कि "तुम अपने सौन्दर्य का लाभ लेना चाह रही हो। बहुत घमण्ड करती हो न अपनी सुन्दरता पर, इन बालों पर। मैं तुम्हें इससे भी खराब दशा में पहुँचा दूँगा।"[16]

आनन्ददेव की कुण्ठा में किये गये इस कार्य से कुमुद को भी एहसास हो गया कि कुण्ठा बढ़कर अब पागलपन तक आ गयी है। कुमुद ने पूछा कि कभी किसी डॉक्टर को नहीं दिखाया? तो संध्या बताती है कि मैंने बहुत कहा कि किसी डॉक्टर के पास चलें आपको दिखाने, तो वो इस पर राज़ी नहीं हुए। फिर भी मैं डॉक्टर से मिलकर इनके लिए दवा लाई और गिलास का पानी, दवा लेकर उनको बहुत समझाया कि दवा खा लीजिए, तब आनन्द बहुत ही गुस्सा करके पास-पड़ोस के लोगों को सुनाते हुए मेरे उपर तरह-तरह के

लांछन लगाने लगे कि ये मुझे दवा खिला के मारना चाहती है। और संध्या बताती है कि इसी कारण आनन्द आज मेन्टल हॉस्पिटल में है। अब नौकरी में रहना मेरी विवशता है क्योंकि बेटे गौरव व पति दोनों के खर्चे मेरे ही उपर हैं।

3.1.11

कहानी संग्रह : 'प्रेम सम्बन्धों की अन्य कहानियाँ'

कहानी : 'चिटके आकाश का सूरज'

पात्र : जीरा

'चिटके आकाश का सूरज' कहानी गाँव कस्बों की कहानी है। इसमें नायिका है 'जीरा' जो कि अभी तीस वर्ष की भी नहीं हुई है, विधवा हो गयी है। उसके पति शहर में राजमिस्त्री थे। एक दिन दोपहर में ऊँचाई पर कार्य करते हुए लू लगने से गिरने पर उनका स्वर्गवास हो गया। उसके दो बच्चे हैं जिनमें एक बच्चा 12 वर्ष का है। पति को मरे हुए 3 वर्ष हो गये हैं। जीरा का सहयोग करने वाला परिवार में कोई नहीं है। उसके दो देवर हैं, परन्तु जीरा के विधवा होने से पहले व बाद में भी उन दोनों का कोई सहयोग नहीं रहा। जीरा थक हार कर अपने ससुराल से अपने भाइयों के घर आ जाती है। यहाँ भी जीवन की दीर्घ जिम्मेदारियों के कारण न तो भाई न ही भाभियों की तरफ से कोई सहयोग मिलता है। और घर में बार-बार जीरा को लेकर तकरार भी होती रहती है। फलस्वरुप जीरा अपने भाइयों का घर छोड़कर पास के ही एक मध्यमवर्गीय किसान के खेत में छोटी-सी झोंपड़ी बनाकर रहती है और किसान के खीते में कार्य करने लगती है और जीवनयापन करती है।

कहानी में बताया गया है कि उसी बस्ती में कहानीकार एक विद्यालय खोलना चाहती है। सारे स्टाफ का चयन भी हो गया है। विद्यालय की बिल्डींग बनाने वाला मिस्त्री एक दिन जीरा को लेकर आता है और फिर जीरा के जीवन का पूरा ब्यौरा बताता है कि

इसको कोई काम दिला दे तो अच्छा रहेगा। कहानीकार जीरा से पूछती हैं कि तुम्हारे पति क्या करते हैं? तो वह बताती है कि वो अब नहीं हैं, उन्हें गुजरे हुए तीन साल हो गये हैं जब मेरी नानकी सवा महीने की थी। अब तो वह भी तीन साल की हो गयी है। लेखीका को जीरा की बातों में भोलापन व साफगोई से कही गयी बातें आकर्षक लगीं। लेखिका ने फिर पूछा कि तुम्हारी उम्र क्या है, तो वह अनपढ़ जीरा कैसे बताती है-

"जीरा कुछ देर सोचती है फिर मुझे समझाना शुरु किया था-

'इग्यरहवाँ में हमारा विवाह हुआ था, उसके तीसरे में गौना गया। उसके दो साल में चार महिना बाकी था तभी हमारे बड़ा बेटा पैदा हुआ था। इस समय उसको बारहवाँ लगा है। अरे बहिन जी, हम आज के हैं? अब तो उमिर नगचा गई।' कहते हुए जीरा के होठों पर एक सहज मुस्कान घिर आई थी।"[17]

जीरा की बातें थोड़ा अजीब तरह की थी परंतु उसकी आँखों की निष्छलता और अनपढ़ होने पर भी कुछ-न-कुछ उम्र का हिसाब रखती है। तो जीरा को विद्यालय के कमरों की साफ-सफाई का कार्य मिल जाता है। उसे नौकरी मिल जाती है। जीरा की बातों से लगता है कि वह भारतीय सभ्यता व संस्कार से ओतप्रोत नारी है। अपने बच्चों के लिए वह माता व पिता दोनों का दायित्व निभाती है।

जीरा बाल-बच्चों वाली विधवा होते हुए भी अपने जीवन के संघर्ष के लिए हमेशा तैयार रहती थी। वह आत्म-विश्वास से भरी हुई महिला है। जब लेखिका स्वयं जीरा को अंधेरे में न आने की सलाह देती है तो वह वहाँ विश्वास के साथ कहती है कि अब हमको कुछ नहीं हो सकता है। वह अपने आपको मजबूत बना लेती है। वह अंधेरे में विद्यालय की सफाई करने आती है। कारण पूछने पर खुदको कितना कठोर बताया है यह पता चलता है-

"इतने अन्धेरे में ही क्यों आ गई जीरा?" मैंने अलसाए स्वर में पूछा था। घड़ी न होने के कारण समय का पता न चल पाने का जीरा का उत्तर सुनकर मेरा मन द्रवित हो उठा था। मन ही मन एक भय भी उत्पन्न हुआ कि कहीं इतनी दूर से इस अन्धेरे में ही चल देने वाली जवान जीरा के साथ कोई दुर्घटना न हो जाए। मैंने समझाया था।

'कुछ देर करके चला करो जीरा। अन्धेरे में कहीं कोई...' मेरी बात को बीच में ही काटते हुए जीरा बोली थी-

'डिवटी करने निकले हैं बहिनजी.. चोरी नहीं कि डर लगेगा। फिर इस वन में अब किसका डर?' मै धुँधला पड़ी थी उसके तर्क पर। बात-बात में जीरा अपनी प्रौढ़ावस्था का विश्वास दिलाती।"[18]

जीरा स्वयं को और सभी को बार-बार यह एहसास दिलाना चाहती है कि वह अब प्रौढ़ हो गयी है। उसकी जिंदगी अपने दोनों बच्चों के सिवा कुछ नहीं है। वह अपने मरे हुए पति की यादों में रहकर ही जीवन यापन करना चाहती है। वह अपने पति को अपनी इस परिस्थिति के लिए जिम्मेदार नहीं मानती है और कभी भी पति को दोष नहीं देती है। और न ही कभी दूसरी शादी के लिए ही सोचती है। वह पूर्ण रुप से अपनी परिस्थिति से संघर्ष के लिए तैयार है। वह कभी भी कमजोर नहीं दिखती है और अपने स्थान पर सशक्त महिला है। उसकी बातों से लगता है कि कठिन परिस्थिति है पर उसका आत्मविश्वास मजबूत है। वह अपने बच्चों के लिए छोटी-छोटी योजनाएँ बनाती रहती है। कुछ न कुछ निवेश करके पैसे बचाएगी और बच्चों पर खर्च करेगी। लेखिका बताती है कि जीरा से बहुत पूछने पर वह अपने पति, ससुराल व मायके की यात्रा बताती है। उसमें पति की बहुत ही इज्जत से वह कहानी बताती है। एक पूर्ण भारतीय संस्कारों से ओत-प्रोत महिला की तरह अपने पति व बच्चों से बहुत ही स्नेह रखती है। और बच्चों के लिए हर संघर्ष करने के लिए तैयार रहती है।

वह बताती है- अभी उसके पास बर्तन नहीं है परन्तु मालकिन से लेकर अपने बच्चों को कुछ न कुछ खिलाती रहती है, बनाती रहती है।

ऐसा भी नहीं है कि जीरा कमजोर है, गरीब है, उसके पास सुविधाओं की कमी है तो वह किसी से भी कुछ भी सहायता ले सकती है। लेखिका को जब जीरा बताती है कि अभी मेरे पास बर्तन नहीं हैं तो लेखिका उसे 100 रुपये देती है कि खरीद लेना परन्तु वह इतनी स्वाभिमानी है कि बहुत कहने पर भी उसने पैसे नहीं लिए। अंत में अपने वेतन के एडवांस के रुप में पैसे स्वीकार किए थे।

एक अन्य प्रकरण है कि जीरा की माँ लेखिका से मिलकर बताती है कि एक अधेड़ उम्र का मिस्त्री है जिसकी पत्नी मर चुकी है। उसके भी बच्चे हैं। जीरा की शादी यदि उस मिस्त्री से हो जाएगी तो जीरा के बच्चों को बाप व उस मिस्त्री के बच्चों को माँ मिल जायेगी। परन्तु जीरा नहीं तैयार हो रही है। विद्यालय की मालकिन को भी यह बात अच्छी लगी थी परन्तु जीरा ने जब यह बात सुनी तो वह गुस्सा हो गयी अपनी माँ पर कि मैं किसी पर बोझ नहीं हूँ। मैं अपने भर का कमा लेती हूँ, कोई दिक्कत नहीं है। अब इतनी उम्र में दो बच्चों को लेकर क्यों और जिन्दगी खराब करे। वह बताती है कि वह अपने मरे हुए पति के इतर और किसी को अपने दिल में स्थान नहीं दे सकती। वह यह भी बताती है कि एक बार नींद में किसी ने उसके पैर के अंगूठो को छू दिया था तो नींद में होने के कारण उसे गाली दे दी थी। बाद में पहचाना तो बहुत पछताई कि गाली अपने को ही लग जाये।

जीरा को देखने से सबको लगता है कि नासमझ गाँव की अनपढ़ है, वह अपना सही-गलत नहीं जानती है। परन्तु वह बहुत संवेदनशील महिला है। उसको जो समझदारी है, सभ्यता व संस्कृति की, परिवार, समाज आदि की उस तरह से वह अपने स्तर पर बहुत ही मजबूत है, समझदार भी है।

एक दिन की बात है। वह टूटे हुए आइने को कूड़ेदान में फेंकने के लिए गई थी तो आकर चिंता में बोलने लगी कि मालकिन, जबसे मेरे पतिदेव गुजरे हैं तबसे मैंने

शीशा नहीं देखा है। परन्तु आज कूड़ेदान में फेंकने गयी तो मैंने आइने में अपना चेहरा देखा। अभी बहुत उम्र बाकी है मालकिन। इतना कहकर जीरा रोने लगती है और उस मिस्त्री की तरफ देखने लगती है कि शायद वही सहारा बनेगा मेरी इस दुर्दशा में। उसके चेहरे पर नयी उम्मीद दिख जाती है। इससे पता चलता है कि जीरा भले किसी को कुछ न बताये परन्तु वह अंदर ही अंदर तूफान को समेटकर चलती है। जीरा बाहर से कुछ और, अंदर से कुछ ओर मिट्टी की बनी हुई है।

3.1.12

कहानी संग्रह : 'प्रेम सम्बन्धों की अन्य कहानियाँ

कहानी : सुभद्रा का चक्रव्यूह

पात्र : निहारिका

प्रस्तुत कहानी है निहारिका की जो एक कॉलेज जाने वाली लड़की है। उसकी रुचि खेल में है, वह एथलीट है। उसकी प्रशंसा सभी करते रहते हैं। वह मंडलीय खेल स्पर्धा में अपने जिले का प्रतिनिधित्व करने आयी थी। सिद्धार्थ, जो कि स्पर्धा में कमेंटेटर है उसने निहारिका की खूब-खूब तारीफ की थी। साँवली सलोनी सुकुमार-सी दिखने वाली निहारिका ने स्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। सिद्धार्थ ने सबसे पहले निहारिका को बधाई दी थी। निहारिका को जब पता चला कि ये कमेन्टेटर है तब निहारिका ने अपने घर का पता कागज़ पर लिखकर दिया था। इसके कुछ दिन बाद ही निहारिका के घर पर सिद्धार्थ के माता-पिता गये थे मिलने के लिए, शादी का प्रस्ताव लेकर। निहारिका के माता-पिता ने उसे बताया कि भले ही अभी तुम्हारी पढ़ाई व खेल की तैयारी करनी हो, ऐसी शादी कर लेनी चाहिए। तुम्हें वहाँ पर पढ़ाई, खेल के लिए रुकावट नहीं आयेगी। तुम

पढ़ाई और खेल जारी रख सकती हो। ऐसा रिश्ता बार-बार नहीं मिलेगा। निहारिका सचमुच शादी के बाद बहुत खुश थी। पढ़ाई व प्रैक्टिस दोनों चल रहे थे। निहारिका को ऐसा लगता था कि वह किसी प्रेम प्यार वाले झूले में झूल रही है। सिद्धार्थ उसका खूब सहयोग करते थे। एक दिन स्टेडियम में प्रैक्टिस करते हुए निहारिका को चक्कर आ जाता है। वह सिद्धार्थ को पकड़कर बैठ जाती है। सिद्धार्थ उसे रिक्शे से हॉस्पिटल ले जाता है। डॉ. निशि ने बधाई देते हुए प्रैक्टिस न करने की सलाह दी थी।

इस खबर के बाद निहारिका अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहने लगी थी। उसकी परेशानी देखकर सिद्धार्थ उसे अक्सर समझाता था कि कुछ महीनों के बाद तुम फिर अपने खेल की प्रैक्टिस करना प्रारंभ कर सकती हो। पहले जैसा ही सब हो सकता है। फिर भी निहारिका कुछ न कुछ सोचती रहती थी।

एक दिन पत्रिका में एक लेख देखकर उसने कुछ विचार किया और अपनी दोस्त डॉ. निशि के हॉस्पिटल पहुँच कर पूछा कि क्या ये सत्य है कि गर्भावस्था के 2 से 3 माह में औरत की कार्यक्षमता बढ़ जाती है आदि बातें उसने अपनी दोस्त से की। और अपने सपने के बारे में बताया कि कुछ अंतर प्रांतीय स्तर की स्पर्धा है। यदि मैंने उनमें प्रतिभाग नहीं किया तो राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में शामिल नहीं हो पाऊँगी। अपनी दोस्त व डॉ. निशि को वह झूठ बोलने व अबॉर्शन के लिए तैयार कर लेती है। अबॉर्शन के बाद जब निहारिका घर पर रहती है तो सिद्धार्थ उसकी खूब सेवा व देखभाल करता है। फिर एक दिन सिद्धार्थ खुद ही निहारिका से कहता है कि

"सिद्धार्थ अपना कप लेकर उसके पास ही बैठ गए थे। उसकी हथेली को अपने हाथों से सहलाते हुए सिद्धार्थ ने कहा था-

"सोचता हूँ, तुम जल्दी स्वस्त हो जाओ तो इस अन्तर्प्रान्तीय प्रतियोगिता में भाग ले लो। तुम्हारा मन थोड़ा बदल जाएगा।"

"सच सिद्धार्थ," निहारिका चहक उठी थी ।"[19]

फिर आखिर वह दिन आ ही गया जिस दिन निहारिका जीत गयी थी दौड़ स्पर्धा में। पूरा स्टेडियम उसके स्वागत में तालियाँ बजा रहा था। जीतने के बाद निहारिका सिद्धार्थ से खुशी से लिपट गयी थी । स्टेडियम में निहारिका की जीत पर, इतने अच्छे स्वागत पर अभीभूत हो गयी थी, वह बहुत खुश थी । अपनी अपनी स्पर्धा के बाद निहारिका, पति सिद्धार्थ के साथ स्टेडियम की अगली पंक्ति में ही बैठ गये थे।

निहारिका को कुछ देर बाद यह आभास हुआ कि पीछेवाली पंक्ति में से कोई उसकी बाँह पकड़ रहा है , तो उसने देखा कि एक पाँच, छः वर्ष का बालक बाँह पकड़कर बुला रहा है।

बच्चे को देख कर निहारिका फूट-फूट कर रोने लगती है। इसी समय वह चाहती थी कि सिद्धार्थ को सब बता दे, सिद्धार्थ से लिपट कर वह अपने अबॉर्शन की कहानी बता देती है कि कैसे उसने अपने अभिमन्यू की शहादत दी है ट्रॉफी के लिए।

यह कहानी निहारीका नाम की एक आधुनिक प्रगतिवादी सोच की नारी की है। यह कहानी आदर्श है उन महिलाओं के लिए जो अपना अस्तित्व सिर्फ माँ बनने में ही समझती हैं। सुभद्रा का चक्रव्यूह एक आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है जो कि थोड़ा-सा संबल व संतुलन बनाए तो वे बड़े से बड़ा कार्य कर सकती है। परिवार व बच्चे विकास करने के लिए बाधा नहीं होते हैं, सिर्फ संतुलन बना ने की जरुरत होती है।

3.1.13

कहानी संग्रह : 'प्रेम सम्बन्धों की अन्य कहानियाँ'

कहानी : 'अपने न होने का एहसास'

पात्र : सविता

यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी है। इसमें सविता की जीवन गाथा है। कभी लगता है कहानी स्वयं कह रही है, कभी नहीं। लेखिका ने कहानी का तानाबाना सविता की आत्मकथात्मक कहानी के रुप में बाँधा है।

सविता अपने जीवन की कहानी बताती है कि उसका चेहरा कैसा है, रंगरुप कैसा है, वह स्वयं अपने शरीर का परिचय देती है। वह बताती है कि यदि कोई बदसूरत हो तो लोग शारीरिक सुंदरता को बहुत महत्त्व देते हैं। परन्तु अन्य क्षमता को नहीं। सविता जब बच्ची थी तो उसकी माँ उसे कुछ सलीका समझाते हुए बताती है कि-

"थोड़ी सी उम्र खिसकी थी तब माँ ने एक दिन मुलायमियत से मुझे समझाया था...

हँसते समय हथेली से मुँह को ढँक लिया करो बेटा ताकि दाँतों के साथ ही खुल गये लाल मसूढ़े सामने वाले को दिखाई न दे। भरसक कोशिश करके मुँह बन्द रखा करो।"[20]

सविता माँ के द्वारा कही गई इन बातों से और संकुचित हो गयी थी। वह तभी आइने के सामने जाकर देखती है तो उसको बहुत दुःख होता है। उसके दुःख का आलम इतना था कि अपनी कुरुपता पर उसका हृदय पहली बार आँसूओं के साथ रोया था। इसके पहले तो हृदय में ही अपनी कुरुपता का दुःख दबाकर रह जाती थी। पहली बार उसके दिल का दर्द आँसू के माध्यम से बाहर निकल आया था। उसकी माँ ने उसे समझाया था कि भगवान ने सभी को समान बनाया है। हर किसी को कोई न कोई खूबी जरुर दी है। उसकी माँ, उदाहरण देते हुए उसे समझाती है कि तेरे साथ जो रमा पढ़ती है वह देखने में कितनी सुंदर है, परन्तु वह पढ़ाई में बहुत कमजोर है। जब तुम कक्षा सात में थी तो वह कक्षा ग्यारह में थी। परंतु वह अभी भी कक्षा ग्यारह में है। वह लगातार कई सालों से कक्षा में

फेल हो रही है और तुम कक्षा सात से उसके साथ कक्षा ग्यारह में आ गयी हो। तुम्हारी तारीफ विद्यालय के अध्यापक बहुत करते हैं। तुम जब भी पास होती हो तो तुम्हारे पिताजी भी बहुत खुश होते हैं।

सविता सोचती है कि हर परीक्षा में पास होकर वह अपने माता-पिता को खुश कर देती है। परन्तु उस दिन जब उसे शादी के लिए देखने कुछ मेहमान आये थे तो वह चाय देने के लिए गयी थी। उसके लिए कितनी तैयारी सभी ने की थी जबकि परीक्षा मेरी थी, कि कौन-सा कपड़ा पहनेगी, खाने में क्या-क्या रहेगा, सामने कौन-कौन होना चाहिए, कौन-सी बात करनी है, कौन-सी नहीं करनी है आदि। परन्तु उन लोगों को मैं पसन्द नहीं आयी। उस दिन मेरी वजह से मेरे माता-पिता का अपमान हुआ था।

उसके बाद सविता ने अपनी पूरी ताकत लगाकर पढ़ाई की थी जिसका नतीजा यह हुआ था कि वह माध्यमिक शिक्षा सेवा आयोग में प्रवक्ता पद के लिए चुन ली गयी थी। पूरे परिवार में खुशी का माहौल था। इधर पापा ने भी मेरी शादी के लिए खोज की थी। लड़के वालों ने भी मुझे बिना देखे ही कैसे हाँ कर दी, सविता को यह बात खटक रही थी। माँ ने भी उसे बोल दिया था कि शादी की तिथि निश्चित हो जाये तो उपरी बवाल का बहुत असर रहता है इसलिए तुम बाहर न जाया करो। सविता सोचती है कि कभी भी घर में इस तरह की भू-प्रेत की बातें नहीं होती थी। परन्तु अब ही क्यों हो रही हैं। सविता को ये सब बातें खटक रही थीं। उसे अंदेशा था कि बिना मुझे देखे ही शादी के लिए हाँ कर दने के पीछे जरुर ही कुछ बात है।

इसी बीच पापा ने भाग-दौड़ कर के मेरी ज्वाइनिंग करवा दी। शादी के दिन भी आ गये। मुझे विदा कर के पापा-मम्मी बहुत ही संतुष्ट लग रहे थे। वो तो संतुष्ट लग रहे थे अब मेरे जीवन की परीक्षा शुरु हो रही थी। सविता अपने ससुराल के बारे में बताती है कि जो मुझसे छिपाई जा रही थी वह बात यह थी कि पति जो कि क्लर्क है, बात करते हुए

तुतलाते हैं, और शराब का भी सेवन करते हैं। सविता बार-बार उन्हें शराब न पीने की बात कहती है परन्तु वो उसे मर्दानगी का प्रतीक मानता है। उसे छोड़ना नहीं चाहता है।

उसका पति सुरेन्द्र उसको सम्मान नहीं देता था जिसके कारण वह बहुत ही चिंतित रहती थी। बात-बात में फटकार मिलने पर सविता का मन कई बार आत्महत्या करने को करता था। सुरेन्द्र के परिवार में माता-बहनों के द्वारा भी उसे उसके रंग-रुप को लेकर तरह-तरह की बातें करके हमेशा परेशान किया जाता था। इन सब बातों को लेकर जब तक सविता कुछ सोचे समझे तब तक वह गर्भवती हो गयी थी। समय धीरे-धीरे बीतने लगा। उसकी बच्ची अब तीन-चार वर्ष की हो गयी थी। तब भी परिवार वाले और खुद सुरेन्द्र उसकी कुरुपता पर हमेशा ताने मारते रहते हैं।

एक दिन की घटना है कि टी.वी. में हिरोईन की सुन्दरता बताने वाला गाना चल रहा था तभी सुरेन्द्र व उनकी बहनों द्वारा सविता को उसकी सुन्दरता पर ताने बोलने लगते हैं। उस समय सविता को बहुत दुःख होता है। वह अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए व लगातार हो रहे कमेंट के प्रति कुछ बातें बोल देती है जिसे सुनकर सुरेन्द्र गुस्सा हो जाता है और सविता पर बलप्रयोग करता है।

सविता पति के बलप्रयोग से मानसिक व शारीरिक रुप से बहुत व्यथित हो जाती है। अपने दर्द को लेकर वह अपनी बच्ची को लेकर सोने जाती है। शारीरिक व मानसिक इस पीड़ा को लगातार सहते हुए सविता पितृसत्तात्मक सोच वाले इस परिवार से अब थक चुकी है। उसे अपने पति के व्यवहार पर बहुत ग्लानि है। सुरेन्द्र उसे नीचा दिखाने व परेशान करने का कोई भी मौका नहीं छोड़ता है। खास करके उसके रंग रुप को लेकर ससुराल का पूरा परिवार ही उस पर बेवजह की फब्तियाँ कसता रहता है। सविता ससुराल वालों व पति के व्यवहार से खुश नहीं है और अब तो हद ही हो गयी है। वह खुद को लेकर उस परिवार के इतर भी जिन्दगी के लिए सोचती है। उसके मन में चल रहा है कि वह अब ससुराल वालों को छोड़कर अलग होकर वह करेगी जो उसका दिल करेगा।

इतनी अच्छी नौकरी होते हुए, इतने अच्छे से व्यवहार के बाद ससुराल में सिर्फ रंग रुप के कारण ही इतनी प्रताड़ना अब वह नहीं झेल पा रही थी। लेटे-लेटे वह सोच रही थी कि बिटिया डाली को अपनी मम्मी के पास छोड़कर मैं आत्मनिर्भर होकर रहूँगी। परिवार के इस अन्याय से दूर चली जाऊँगी।

सविता यही सब सोच ही रही थी कि उसकी बेटी डाली जाग जाती है। वह सविता के गले से लिपट जाती है और कहती है कि मम्मी, तुम मुझे कभी मत छोड़ना। उसकी इन्हीं भावुक बातों से तब उसे एहसास हुआ था कि कोई तो है जिसको उसके न होने पर दिक्कत होती। उसे चाहने वाला कोई तो मिला। ऐसा दिलासा व उसका एहसास पाकर सविता निहाल हो गयी।

3.1.14

कहानी संग्रह : 'प्रेम सम्बन्धों की अन्य कहानियाँ'

कहानी : 'आदिम गंध'

पात्र : मुक्ता, परतपिया

यह कहानी है परतपिया की जो कि गाँव की अशिक्षित महिला है। वह काम माँगने के लिए मुक्ता के पास आती है जो कि एक वक्ता है। पड़ोसियों के कहने पर मुक्ता उसे काम नहीं देती है। दूसरे दिन फिर परतपिया आती है काम के लिए, बहुत गिड़गिड़ाती है। मुक्ता उसे घर का काम करने को दे देती है। और वह घर में रोजाना आके काम कर रही थी। एक दिन की दोनों की बातचीत से कहानी का प्रारंभ होता है। मुक्ता को भी महिला दिवस पर बोलने के लिए कुछ भावनात्मक, सत्यात्मक बातों की तलाश थी क्योंकि पिछली बार जब उसने बोला था तो उसके भाषण की बहुत सराहना हुई थी।

परतपिया उसे बता रही थी कि विवाह व सगाई में क्या अंतर होता है। मुक्ता यह सोचकर चौंक जाती है कि नई नवेली लड़की दुआह लड़के से शादी कर लेती है जबकि

दुआह लड़की से नया नवेला लड़का शादी नहीं करता है। परतपिया बताती है कि मेरे बाबूजी भी ऐसे ही सगाई करना चाहते हैं, लेकिन मैं नहीं जाऊँगी। वह आगे बताती है कि एक बार पड़ोस की बुआ ने मेरे बाबूजी से दो हजार रुपये लेकर मेरी सगाई एक बूढ़े से करवाई थी। बाद में पता चला कि वह बूढ़ा अपने बच्चों से अलग रह रहा था और बुआ ने उससे चार हजार रुपये लिए थे। यह बताया था कि मेरी शादी नहीं हुई है। फिर मैं एक रात को वहाँ से भाग आयी थी। बहुत परेशान होकर मैं वापस लौटी थी चोरी-चोरी इसलिए अब मुझसे कोई सगाई नहीं करता है।

मुक्ता चाय पीकर कप परतपिया को देकर सोचने लगती है कि इस छोटी-सी उम्र में इसने कितने अनुभव समेटे हुए हैं। यह समाज व समाज की नारी के प्रति ऐसी सोच की वजह से ऐसा है। स्त्री को पता ही नहीं है कि उसके लिए क्या हो सकता है। जागरुकता की कमी के कारण अनपढ़ औरतें गाँव देहात में परेशान रहती हैं। यदि वे थोड़ी जड़ रुढ़ियाँ तोड़ कर सोचें तो उसकी दुनिया बदल सकती है। जागरुकता की कमी से स्त्रियों की दुनिया में संघर्ष सार्थक दिशा में नहीं हो सकता है। परतपिया के संघर्ष का एक आयाम देखते हैं जो स्वयं मुक्ता से कहती है-

"मेम साहब, हमारे मरद की करतूत से हमें कोई काम पर नहीं लगाता, पर हम बूरी नहीं हू मेम साहब। विश्वास करिए, कोई वै देखिएगा तो परतपिया का कान पकड़कर बाहर कर देना मेम साहब, पर मेरे बाल बच्चों के साबुन तेल का खर्चा तो निकल आएगा काम करके। बाबू भाई कब तक बैठाकर खिलाएँगे।"[21]

प्रस्तुत पंक्ति में परतपिया अनपढ़ गाँव की होकर भी अपने हिस्से का संघर्ष स्वयं करना चाहती है। वह कमजोर प्रकृति की नहीं है। सभी नारियों में यही गुण होता है कि वे कमजोर नहीं होती हैं परन्तु समाज की उनके प्रति दूसरे दर्जे की सोच के कारण बन गयी है। इसी कारण नारी पर शोषण होता है।

लेखिका एक पुस्तक का जिक्र करते हुए प्राचीन व ऐतिहासिक काल में नारियों की स्थिति के बारे में बताती है कि प्राचीन काल में नारियों की स्थिति इतनी अच्छी थी कि परिवार की बागडोर के इतर भी महिलाएँ पूर्ण सशक्त थीं, कहीं-कहीं पर तो मातृसत्तात्मक समाज का भी उल्लेख मिलता है। महिलाओं के हाथ में बागडोर होने की वजह से परिवार रुपी इकाई खुशहाल रहा करती थी। स्त्री-पुरुष का समान अधिकार हुआ करता था। उसे शक है कि क्या ये सत्य था, क्या महिलाओं को सारे अधिकार प्राप्त थे? क्या तब शोषण नहीं होता था? सृजन व पालन पोषण तो तब भी स्त्री का ही कार्य हुआ करता होगा न ? तब और अब में क्या अन्तर हुआ है। क्या तब नकार पाती थी स्त्री पुरुषवादी आग्रह को? कभी वह अपनी स्वेच्छा से नकार पायी होगी क्या कि इच्छा यह नहीं कुछ और है?

फिर वह सोचती है कि परतपिया जैसे घरेलू कार्य के योग्य है, यदि बचपन से ही इसे कलछी नहीं कलम थमायी गयी होती तो वह आज के मुकाबले में अपनी समस्याओं से बेहतर ढंग से संघर्ष कर रही होती। उसको बोलने का टॉपिक व एक नारी की नई पहचान बताने का तरीका यों मिल गया कि स्त्री को बचपन से ही कलछी नहीं कलम पकड़ा दो।

परतपिया एक दिन बताती है कि टी.वी. घर में है क्योंकि छोटी बहन के शादी में दहेज देने के लिए लिया गया है। मुक्ता को यह बात खटकती है कि दहेज में टी.वी. दे सकते हैं तो क्या बचपन से शिक्षा नहीं दे सकते हैं क्योंकि शोषण के प्रतिकार की क्षमता अनपढ़ परतपिया में थी। जब उसको मैंने कहा कि यह बातें और किसी से मत कहना कि महतबवा तुम दोनों बहनों के साथ छेड़छाड़ करता है, तो वह बोलती है-

"देखो, हमसे कह दी सो कह दी, अब किसी और से मत कहना, अन्यथा लोग तुम्हारे और तुम्हारी बहन के बारे में गलत सोचेंगे। बदनामी होगी.."

अरे भाभी की बात, आज हम चुप रह जाते तो उसका मन नहीं बढ़ जाएगा ? कल को इसकी बहिन-बिटिया को..."[22]

लेखिका नीरजा माधव ने परतपिया का चरित्र अनपढ़ परंतु मजबूत रखा है जैसे कि औरतों को स्वभाव होता है वे अपने हिस्से का संघर्ष करने में पीछे नहीं रहती हैं।

परतपिया की बातें सुनकर मुक्ता अपनी जिन्दगी पर विचार करने लगती है कि शायद मैं भी संस्कारों और सिद्धान्तों के आवरण को हटाकर खुद को मुक्त कर पाती, तो इस पुरुषवादी समाज को जवाब मिल जाता। लेकिन मैं सबके सामने खुद को बेपर्दा नहीं कर पायी और अपने पति के बेफिजूल आरोपों के कारण अदालत से तलाक मिला। मैंने वह शहर छोड़कर अपने बच्चे के पालन-पोषण के लिए दूसरी नौकरी कर ली।

मुक्ता खुद की परतपिया से तुलना करती है कि शिक्षित होकर मैं और अशिक्षित होकर परतपिया में क्या फर्क है ? वह बेधड़क, बिन्दास है, काम जानकारी ही उसकी हिम्मत है। फिर भी वह जिन्दगी में परेशान है। सुशिक्षित होते हुए मैं भी उतनी ही परेशान हूँ। आखिर फर्क क्या है हम दोनों में !

3.1.15

कहानी संग्रह : 'प्रेम सम्बन्धों की अन्य कहानियाँ'

कहानी : 'उपसंहार : अब क्या करें?'

पात्र : अंजना

यह कहानी है अंजना की जो कि एक सामान्य मध्यमवर्ग की लड़की है, कॉलेज जाती है। उसके माता-पिता व परिवार ऐसा है कि ना ही वे अभिजात्य वर्ग में हैं न ही निम्न वर्ग में। मध्यम वर्ग ही ऐसा है जिसका शोषण सबसे ज्यादा होता है। जो रुढ़ि, परम्परा, सभ्यता व संस्कृति का पोषक होता है। समाज का सारा दारोमदार उसी पर होता है। ठीक उसकी वर्ग की नायिका को नीरजा जी ने चुना है अपनी इस कहानी के लिए जो कि दर्शाती

है इसी सभ्यता-संस्कृति बंधन में नीरजा जी ने अंजना के माध्यम से समाज को स्त्री मुक्ति की त्रिकोणीय दृष्टि से देखने-दिखाने का प्रयास किया है। और सबके लिए एक प्रश्न भी दिया है कि स्त्री की तीनों कोनों से दशा-दिशा क्या होनी चाहिए।

अंजना महाकाली परिवार के बाबू अमरनाथ राय की पुत्री थी। वे जाति से राय नहीं थे, रायबहादुर की पदवी अंग्रेजों ने उन्हें दी थी। और जमींदारी चली जाने के बाद पहले जैसे हालात नहीं हैं अब। परन्तु वही है कि रस्सी जल गयी परन्तु बल नहीं गया है। समाज में अपनी हैसियत बनाए रखने के लिए रायसाहब बने फिरते रहते हैं। संतान तो उनकी कई हैं परन्तु एक-दो ही कार्यकुशल हैं। पाँचवे नंबर के लड़के के बाद लड़की है अंजना, जो कि 12वीं पास करके आगे की पढ़ाई के लिए उसका नजदीक में कोई कॉलेज न होने के कारण दूर कॉलेज में एडमिशन कराना पड़ा। उसे दूर पढ़ने भेजने से अमरनाथ का पूरा परिवार खुश नहीं था। परन्तु लड़की की शादी की चिन्ता कि कम पढ़ी-लिखी न रह जाए। कम शिक्षा पर दान दहेज ज्यादा देना पड़ेगा। रायबहादुर के पाँच बेटों में एक ही पढ़-लिखकर क्लर्क हो पाया था। अंजना के लिए सायकिल आ गयी थी। साथ में जाने के लिए पड़ोसी विश्वकर्मा का बेटा भी पुरानी साइकिल ले कर साथ कर दिया गया था ताकि खेत-खलिहान से दूर पढ़ने जाये तो कोई अनहोनी न हो। रायसाहब ने देखा कि कभी-कभी पप्पू अकेले ही चला आता था, अंजना साथ नहीं होती थी। कारण पूछने पर अंजना बताती कि एक्स्ट्रा क्लास होती है।

असलियत तो यह थी कि देवराज नामक कोई लड़का रास्ते में पुलिया पर अंजना का इंतजार करता था जब अंजना अकेली होती थी तो दोनों कुछ देर पुलिया पर बैठा करते थे। देवराज व अंजना का प्यार परवान चढ़ने लगा था। रायसाहब एक पिता है। पिता अपने बच्चों की बचपन से सारी हरकतें देखते रहते है। बच्चे में आने वाले परिवर्तन को भी वह खूब समझते है।

राय साहब को भी अंजना की इस हरकत का पता चला था।

"और इस प्रथम कागज़ के लेन-देन के बाद मध्यस्थ को बहिष्कृत कर दिया गया था। प्रत्यक्ष व्यवहार में मध्यस्थ की भूमिका की क्या आवश्यकता?

उड़ती-उड़ती खबर राय साहब के कानों तक पहुँची तो कान खड़े हो गए, पर अंजना से सीधे पूछने का साहस न हुआ। कहीं बात सही निकल गई और जमाने की देखादेखी उसमें भी अपना निर्णय लेने-देने का साहस आ गया तो फिर खानदान की प्रतिष्ठा तो धूल में मिल जायेगी। इसलिए उन्होंने पहले पुख्ता सबूत ढुँढ़ने का विचार किया। हो सकता है ये सब लड़की को बदनाम करने की नीच हरकतें हों।"[23]

एक दिन राय साहब ने स्वयं प्रस्ताव रखा था स्कूटर से मुझे छोड़ने का। और लेकर भी गये छोड़ने को। पुलिया पर पहुँचे तो अंजना व स्कूटर बैठे सिगरेट फूँक रहे देवराज की हरकतें देखकर वहीं से ही वापस घर को निकल आये। राय साहब को इस बात से बहुत आघात लगा। उन्होंने इसके बाद अंजना को कॉलेज जाने नहीं दिया। फिर उसकी शादी खोज कर अच्छे से निपटा दी। बात यह हुई कि अंजना अब ससुराल से ही पढ़ाई करेगी, या सिर्फ परीक्षा में ही शामिल होकर कोर्स पूरा कर लेगी।

अंजना की शादी हो गयी, वह अब सिर्फ परीक्षा देने ही जा सकती है। आज परीक्षा का प्रथम पेपर था। अंजना अपने भैया के साथ जैसे ही पुलिया पर पहुँची, उसने चारों ओर देखा। देवराज कहीं नज़र नहीं आया। उसे देवराज से बहुत सहानुभूति हो रही थी कि उसे कोई संदेश भी नहीं दे पायी मैं। उसने कितना इंतजार किया होगा मेरा आदि आदि। अंजना ने देवराज को इस बीच दो पत्र भी भेजे जिससे तीसरे पेपर पर देवराज अंजना से मिलने के लिए आ गया। अंजना ने भी पुस्तकालय आदि से स्त्री-मुक्ति के ढेर सारे साहित्य का पठन किया था। उसमें भी स्त्री-मुक्ति की हिलौरें उठने लगी थी। देवराज से मिलकर उसे लगा कि वह जानवर तो है नहीं, उसकी भी अपनी भावनाएँ हैं , पसन्द हैं। अतः वह परीक्षा समाप्त होने के पहले ही अपनी जिंदगी की एक और परीक्षा देने के लिए

निकल गयी। उसका भाई परीक्षा के बाद उसे वापस लेने आया तो वह उसे मिली ही नहीं ।

उसे अपने शादीशुदा जीवन के मुकाबले व माता-पिता की बदनामी का जरा भी खयाल नहीं रहा। अंजना अपनी मुक्ति व पसन्द से यहाँ से बहुत दूर अपनी जिन्दगी ले जाना चाहती थी। परन्तु जल्द ही उसे पता चल गया कि यह प्यार जो बिना किसी जमीनी हकीकत के है, एक-दूसरे का साथ कितने दिनों तक दे सकता है। शुरु-शुरु में दोनों को बड़ा आसान लगता था, परन्तु जब अंजना को अपने माता-पिता व ससुराल की इज्जत का खयाल आता तो वह बहुत दुखी होती। और जब देवराज को पुलिस एक अपराधी की तरह खोजने लगी तो उसका प्यार सूख गया। अब उसे अंजना अच्छी लगना बन्द हो गयी। जिन्दगी अंजना के साथ जीना उस के लिए असम्भव हो गया। उसने खतरनाक निर्णय लेकर अंजना को उफनती गंगा में फेंक दिया।

अंजना जिंदा बच गयी । समाज, गाँव, परिवार आदि सबने अपने-अपने हिसाब से बातें बताई परन्तु अब अंजना क्या करे, कहाँ जाये। स्त्री मुक्ति ने तो उसे गंगा में फेंक दिया, माता-पिता के प्यार से अलग किया, परम्पराओं में रहकर वह खुश नहीं थी। इन तीनों त्रिकोण के बाद एक लड़की अब क्या करे इस प्रश्न का जवाब लेखिका सबसे माँग रही है।

3.2 नीरजा माधव के उपन्यासो में नारी पात्रों का परिचय

3.2.1 मीना (तेभ्य: स्वधा)

यह उपन्यास भारत पाकिस्तान विभाजन पर आधारित है। इस विभाजन के दौरान लोगों को जो परेशानीयाँ हुई उसी को ध्यान में रखकर शोषण, अत्याचार, मार-

काट, आतंकवादियों द्वारा हर तरह से शोषण आदि के चित्रण के साथ-साथ लेखिका नीरजा माधव ने इस उपन्यास में अन्य मुद्दों को भी उद्घाटित किया है।

'तेभ्य: स्वधा' उपन्यास में मुख्य कथा की नायिका 'मीना शुक्ला'है, वह रावलपिंडी में अपने माता-पिता के साथ रहती थी। उसका मूल निवास बनारस था, व्यापार करने के लिए उसके पिता परिवार के साथ रावलपिंडी में रहते थे। रावलपिंडी में उनका सिल्क एंपोरियम का व्यापार था। वहीं पर साथ में मीना भी रहती थी जो कि इस उपन्यास की नायिका है। वह अपने संघर्ष और विभाजन की त्रासदी की कथा स्वयं अपने बेटे को सुनाती हैं, कि किस तरह कबाइलियों ने उसका अपहरण कर अत्याचार एवं शोषण कर मीना से अमीना बना दिया। वही मीना अब वृद्धावस्था में कवाइली हमले में मारे गए, सभी के लिए गया में तर्पण करती है, परिचित-अपरिचित सभी का पिंडदान करती है और अपने मूल घर वाराणसी जाती है, जहां उसका छोटा भाई दद्दन उसे मिलता है। इस उपन्यास मे मीना स्वयं बताती है। कि, " हम लोगों का तो अपना पैतृक घर ही वाराणसी में, जहां दादी और बाबा के साथ रहने के लिए बाबूजी ने छोटे वाले दद्दन को छोड़ दिया था। रावलपिंडी में ही बाबूजी का सिल्क एंपोरियम का बिजनेस था। अम्मा, बाबूजी के साथ मैं और छग्गन भैया वहीं रह कर पढ़ते थे। वे एम. ए. अंतिम वर्ष में थे और मैं एम. ए. प्रथम वर्ष में। बनारस से ही बी.ए .करने के बाद मैंने अम्म- बाबूजी के साथ रहने का निर्णय लिया था। अम्मा के बिना बनारस का इतना बड़ा घर खाली- खाली लगता था। "[24]

भारत और पाकिस्तान का जब बंटवारा हुआ तो लोग इधर से उधर जाने लगे। मीना भी रावलपिंडी में माता-पिता के साथ रहती थी, उसके साथ बनारस के आसपास

के लोग भी रहते थे। सभी आनन-फानन में अपने कारोबार को आधे- पौने दाम में बेच कर अपने- अपने मूल निवास के लिए, एक समूह बनाकर चल दिए थे। मीना बताती है कि लोगों के आवागमन में जब मार- काट, लूट आदि की खबरें सुनी तो सब एक स्थान पर रुक गए, कि बाद में जाएंगे परंतु धीरे-धीरे खतरा बढ़ता ही गया। सभी लोग धीरे-धीरे एकांत स्थान पर शिविर बना कर रहने लगे। बाहर आना-जाना अब सुरक्षित नहीं रह गया, कुछ दिन और बीते तो हिंदुओं पर और भारत जाने वाले लोगों पर कवाइलियों द्वारा जानमाल के हमले होने लगे। कबाइल हमले में सभी को मार देते। वह औरतों लड़कियों की अस्मत लूटते, फिर उनकी भी जान ले लेते। मीना बताती है कि हम सभी लोगों पर खतरा बढ़ता ही जा रहा था। अब हम लोग गांव-शहर से दूर दो पहाड़ियों के बीच में अस्थाई घास- फूस का छप्पर बनाकर रहने लगे, और खाद्य सामग्री चोरी छिपे बाजार से लाते थे। शाम होने से पहले सभी लोग खाना खाकर दीपक आदि बंद कर देते ताकि हम लोग पहाड़ियों में छिपे हैं किसी को पता ना चले। शाम होते ही अंधेरा कर के सभी ठंड में रहते थे। पुरुष जो थे वे आपस में टीम बनाकर पहाड़ी पर रात में पहरा देते थे।

मीना बताती है कि जिस रात हम लोगों पर हमला हुआ उस रात भी सभी पहरा दे रहे थे। कबाइली आये और सभी को निशाना बना कर मार दिया। हमले वाली रात को मीना अपनी कुटिया से बाहर निकल कर पत्थर पर बैठी थी। अचानक हमला हुआ वह अपने माता-पिता के पास नहीं जा पा रही थी। अतः वह वहीं दो पत्थरों के बीच में डर से दुबक गई थी। वह बताती है कि " और मैं पत्थर से कूदकर, नीचे उसी चट्टान से चिपक कर बैठ गई थी। दोनों पहाड़ियों से शिविर पर निशाना साध- साधकर गोलियां चलाई जा रही थी। जो भी बाहर निकलने का प्रयास करता, वही जमीन पर धराशायी हो

जाता। मेरा कलेजा धाड़- धाड़ धड़क रहा था, दिमाग सुन्न होता जा रहा था, फिर भी मैं उसी चट्टान से चिपकी बैठी रही थी। मैं अपनी भूरी शॉल सिर पर ओढे थी। शायद इसीलिए चट्टान से अलग नहीं दिख रही थी। अंधेरा होने के कारण एकाध बार उस चट्टान पर भी टॉर्च की तीखी रोशनी पड़ी थी, पर कोई गोली नहीं चली थी। भैया का स्वर मौन हो गया था। आधे घंटे की तड़तड़ाहट के बाद सब कुछ मौन हो गया था। कोई स्वर नहीं, चारों तरफ सन्नाटा.... मौत का सन्नाटा... बारूदी गंध ... और मैं चट्टान से चिपकी हुई अपनी मौत की आहट सुनती हुई, गिनती हुई, बूटो की खट- खट आस- पास से गुजर जाती तो एक बार मैं धीरे से सांस ले लेती और फिर दम साधे चिपक जाती उसी चट्टान से इस समय मेरे सामने केवल मेरी मौत नाचती दिखाई दे रही थी। अम्मा, बाबूजी, भैया सभी जैसे गौण हो गए थे। कितना भयंकर होता है मृत्यू से साक्षात्कार !"[25]

नायिका मीना का संघर्ष तब से शुरू होता है जब वह इन कबाइलियों के हमले में अपने माता-पिता, भाई आदि के साथ सभी हिंदुओं के समूह को रात में ही निशाना साधकर मार दिया जाता है। जिसमें वह बच जाती है, कबाइलियों में से एक साफी खान नामक आतंकवादी उसे उठाकर अपने साथ ले जाता है। मीना पर वहीं से अत्याचार शुरू होता है। पाकिस्तान में जाकर मीना शुक्ला का नाम बदलकर अमीना हो जाता है। आतंकवादी ऐसे ही महिलाओं को अपना शिकार बनाते रहते हैं। क्योंकि आतंकवादियों का यह मानना था कि यदि निकाह किये बिना वे मारे जाते हैं तो उन्हें शहीद या गाजी नहीं माना जाता। इसीलिए वे अपनी हवस का शिकार ऐसी औरतों को बनाते हैं, और निकाह करके नरक भोगने के लिए उनको मजबूर कर देते हैं। साफी खान भी मीना को उठाकर ले जाता है। अपनी बस्ती में रखता है, अब उसका नाम मीना नहीं अमीना रखा है। अमीना

के सिवा दो और पत्नियां हैं, कुल 3 पत्नियां हैं उसकी। सभी पर ऐसे ही अत्याचार करके निकाह किया है। मीना जो अब अमीना बन चुकी है, मजबूर होकर कबाइली बस्ती में रहती है। वह घर के बाहर नहीं निकल सकती है। उसे कहीं आने-जाने की इजाजत नहीं है, वह भागने का प्रयास करती है। परंतु पकड़ी जाती है। पकड़े जाने पर साफी खान उसकी बहुत पिटाई करता है। एक बार तो पकड़े जाने पर साफी खान अपने साथियों को कहता है कि पहाड़ी के पीछे ले जाकर इसके साथ तुम तीनों अत्याचार करो। कभी-कभी घर पर भी वह अमीना की पिटाई राइफल के बूट से करता था। साफी खान की पिटाई से अमीना बेहोश हो जाती है। अन्य दोनों पत्नीयाँ उससे सहानुभूति दिखाती हैं, और अपने ऊपर हुए अत्याचार व नारी जगत के ऊपर अत्याचार पर बात करती हैं।

अमीना मजबूर होकर वहीं रहती है। कई साल बीत जाने पर उसे एक पुत्र होता है, जिसे वह अजीत नाम देती है, परंतु उसका नाम अजीज है। अतः अमीना उसे हिंदू नाम या मुसलमान नाम से न बुलाकर अज्जू बुलाती थी। अज्जू को परंपरागत मुस्लिम संस्कार दिए जाते हैं, उसे कुरान की आयतें रटाई जाती हैं। अमीना के अंदर जो मीना शुक्ला है वह भी अपने बेटे को अपने हिंदू रीति- रिवाज और शिक्षा- दीक्षा देती रहती है। परंतु सभी से चोरी-छिपे। एक बार साफी खान को पता चल जाता है कि बेटे को संस्कृत के श्लोक याद हैं तो वह अमीना की खूब पिटाई करता है, और उसका धर्म भ्रष्ट करने के लिए उसके मुंह में गोश्त का टुकड़ा डाल देता है, अमीना बेहोश हो जाती है। इतने सब अत्याचार सहकर अमीना सिर्फ अपने बच्चे के लिए जी रही थी। उसकी उम्मीद सिर्फ अज्जू था, उसका अजीत। वह स्वयं स्वीकार करती है कि

" अज्जू को उसने एक जीवन नहीं, आहुति की तरह तैयार किया है, अपने संकल्प की वेदी पर एक आहूति की तरह । इस संबंध में वह मां नहीं, एक कठोर नारी है, केवल नारी । एक शक्ति स्वरूपा नारी, जो समय आने पर दुर्गा की तरह सिंह जैसे हिंस्र जीव को भी साध लेती है और उस पर सवार हो दुष्टों के दमन का बीड़ा उठा लेती है । अपने संपूर्ण जीवन की साधना से उसने भी एक वीर पुत्र तैयार किया है । एक सिंह, जो मनुष्य के बीच उपजी पशुता का संहार कर सकने में सक्षम होगा ।"[26]

धीरे-धीरे अज्जू बड़ा होता है । काफी समय बीतता है । इस बीच उपन्यास में अन्य संबंधित मुद्दों जैसे धर्म, आतंकवाद, सांप्रदायिकता इन सब को प्रायोजित करने वाले अनेक मुद्दों पर भी बातें हुई है । जैसे विस्थापन पर हिंदुस्तान जाने वाले देवसरण बाबा का एक कथन निम्न है।

" अरे भैया, पूरा इतिहास उठा कर पढ़ लो, प्राचीन से लेकर आज तक । राजा बदले, सत्ता बदली, एक दूसरे की पीठ में छुरा घोंपकर राज्य हाथियाया गया पर कभी प्रजा बदली गई हो? ऐसा यह पहली बार हो रहा है । प्रजा की अदला बदली और उसमें भी इतना खून खराबा शायद इतिहास में पहली बार हो रहा है।"[27]

मीना उर्फ अमीना को अज्जू के पैदा होने पर जीने के लिए एक उम्मीद और एक आसरा मिल गया । उसने बाकी समय साफी खान के अत्याचार में ही बिता दिया । लेकिन इतने साल बीत जाने पर भी उसे बनारस नहीं भूला था, राजौरी घाटी में हुई ढाई हजार हिंदुओं की निर्मम हत्या नहीं भूली थी । उसके अंदर की मीना शुक्ला अभी भी जिंदा

थी, जिंदा ही नहीं बल्कि तड़प रही थी। बनारस के लिए अपने भाई व उनके परिवार के लिए, राजौरी घाटी में मारे गए हिंदुओं के तर्पण के लिए।

अमीना अपने पुत्र को ऐसी शिक्षा देती है कि वह एक अच्छा इंसान बने। निश्चय ही अज्जू के अंदर पिता की अपेक्षा माता की दीक्षा का असर ज्यादा था। तभी तो विस्थापन के समय होने वाली कहानी और अपनी मां और ऐसी ढेर सारी महिलाओं पर हुए अत्याचार को जानकर वह आक्रोशित हो जाता है। वह अपनी मां से शिकायत करता है कि यह सब तुमने झेला है मेरे अब्बू ने इतना अत्याचार किया है तुम पर, मुझे अब्बू के बारे में पहले क्यों नहीं बताया। उसे अपने अब्बू से नफरत हो गई थी। वह अपनी मां से सिद्धेश्वरजी, प्रियंवद आदि से पाकिस्तान, आतंकवाद पर सब सत्य जानकर आश्चर्य होता हैं, परंतु जब पाकिस्तान वापस गया और वहां के क्रियाकलाप को उसने दूसरी नजर से देखा तो उसे सत्य का आभास हुआ। प्रतिक्रिया स्वरुप उसने पाकिस्तानी चोले को उतार फेंका, और एक हिंदुस्तानी सिपाही की तरह कार्य करके अपने देश, अपनी मां की शिक्षा- दीक्षा का असर दिखाकर सत्य का साथ दिया। पाकिस्तान में पनप रहे आतंकी शिविर को नष्ट कर वह भारत की सीमा में आकर अपनी पहचान अजीत शुक्ल बताता है। तब एक मां ,की एक नारी की जीत होती है। जीत तो तब भी होती है नारी की, जब सिद्धेश्वर बाबा अपने पुत्र प्रियंवद को मीना शुक्ला का परिचय देते हुए बताते हैं कि "अपने देश में इतने लोगों के साथ कत्लेआम हुआ और कोई नामलेवा भी न रहा। माताजी इस उम्र में उन लोगों का तर्पण और श्राद्ध कर रही हैं। यह बहुत बड़ी देशभक्ति है इनकी। तुम इन्हें प्रणाम करो।"[28]

नीरजा माधव के इस उपन्यास में देश विभाजन व नारियों सहित पूरी जनता के कष्टों व इतर सामाजिक सरोकार की बात भी बताई गई है। सामाजिक संबंधो के अलावा

रीति व व्यवहार पर बात की गई है। इस उपन्यास में सांप्रदायिकता व धर्म पर बहुत बातें हुई हैं। नीरजा जी ने बताया है कि अच्छे जीवन के लिए धर्म एक आधार है।

दो धर्मों की तुलना करने पर कुछ विशेष नहीं मिलता है। सब धर्म बराबर हैं। नीरजा जी ने उपन्यास में पात्र के माध्यम से बताया है कि, धर्म की तुलना करने पर एक दूसरे धर्म की बुराइयां ही मिलती हैं। उन्होंने चांद को सामने करके बताया है कि, एक धर्म में चांद को देखकर महिलाएं बेटे के लिए व्रत रखती हैं तो, दूसरे धर्म में उसी चांद को देखकर ईद मनाते हैं। कोई भी धर्म संकीर्ण नहीं है, बल्कि उसके मानने वालों, व व्याख्या करने वालों के द्वारा बंधन बना दिए जाते हैं जो कि मूल विचारधारा से दूर होते हैं।

3.2.2 भवप्रीता (अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी)

डॉ नीरजा माधव जी का यह पाँचवा उपन्यास है। नीरजा जी ने यह उपन्यास डायरी शैली में लिखा है। जिसकी नायिका भवप्रीता है, जो कि एक पुलिस कांस्टेबल है। जो हर शाम को डायरी लिखती है, जिसमें उसकी वह सारी बातें होती हैं, जो वह करती है, जो वह सोचती है जो उसके साथ घटित होता है। वह बहुत संवेदनशील महिला है और साथ ही दलित महिला कांस्टेबल भी है। भवप्रीता बनारस में रहकर पुलिस के रूप में सरकारी सेवा देती है जिसकी ड्यूटी शहर के अलग-अलग स्थानों पर लगती है जिसमें कहानी में अलग-अलग प्रसंग आते हैं। सांप्रदायिक और राजनीतिक विश्लेषण होता है। पुलिस प्रशासन, आरक्षण भारत का इतिहास, आतंकवाद आदि विषयों का मानवीय आधार पर चर्चा की है। भवप्रीता के दो भाई हैं पतिराम और बालेंद्र एक पेशे से डॉक्टर है,

जो अपना परिवार लेकर बड़े शहर में रहता है। दूसरा भाई गांव में ही पिता के स्थान पर नौकरी पाया है। भवप्रीता का पति रामबली जो कि पुलिस विभाग में कांस्टेबल था। रामबली का विवाह पहले ही हुआ था, परंतु उसकी पत्नी दमा की बीमारी के चलते अपने बच्चों का ख्याल सही से नहीं रख पा रही थी अतः रामबली को बच्चों को संभालने के लिए एक और औरत की आवश्यकता थी ऐसे में भवप्रीता के परिवार के लोग रामबली की सरकारी नौकरी होने के कारण शादी को तैयार हो जाते हैं। क्योंकि भवप्रीता का परिवार शूद्र जाति का था और भवप्रीता के परिवार को लगता है कि नौकरी वाली शादी का अवसर अच्छा है यह शादी जरूर करना चाहिए। अतः समझौता करके भवप्रीता की शादी पहले से विवाहित रामबली से हो जाती है। कुछ दिन बाद रामबली की एक हादसे में मृत्यु हो जाती है तो रामबली के स्थान पर भवप्रीता को कांस्टेबल की नौकरी मिल जाती है जिसे वह बनारस जिले में रहकर करती है। भवप्रीता के साथ उसका पुत्र व उसकी विधवा रहती हैं।

भवप्रीता की ड्यूटी भगवान विश्वनाथ मंदिर की रक्षा में लगती है, वह पांडेपुर में रहती है, उसके साथ के लोग मंदिर के पास किराए पर रहने की योजना बनाते हैं परंतु वह पुराना निवास नहीं छोड़ना चाहती क्योंकि नए मकान मालिक मेरे शूद्र होने और मेरे परिवार को लेकर आपत्ति करेंगे। क्योंकि वह विधवा भी है और दलित भी इसलिए मकानवाले नए किरायेदारों से ज्यादा प्रश्न करते हैं और हमेशा नजर भी रखते हैं। भवप्रीता जब शादी से पहले गांव में रहती थी तब उसका प्रेमी मृगेंद्र था जो कि साथ में स्कूल में पढ़ता था, स्कूल में मृगेंद्र ने भवप्रीता को एक बार पत्र द्वारा अपने दिल की बात बताने की कोशिश की थी तब भवप्रीता ने वह पत्र स्कूल के प्रिंसिपल को दे दिया था। प्रिंसिपल भालेन्द्र को बेल्ट से मारते हैं भालेन्द्र का स्कूल आना बंद हो जाता है। भवप्रीता मृगेंद्र के घर जाकर उससे माफी मांगती है और उसे परीक्षा देने को कहती है। उसके बाद दोनों स्कूल कालेज साथ-साथ करते हैं। भवप्रीता को मृगेंद्र से प्यार हो जाता है परंतु वह कभी कहती

नहीं है। फिर मृगेंद्र उसे बहुत साल बाद अपनी पत्नी के साथ बाबा विश्वनाथ मंदिर पर मिलता है जहां भवप्रीता मंदिर सुरक्षा ड्यूटी में लगी है । वह मृगेंद्र को मंदिर का दर्शन कराती है। मृगेंद्र व उसकी पत्नी के साथ मंदिर में घूमते समय भवप्रीता को लगता है कि मृगेन्द्र अब भी उसे चाहता है। अपने पुराने प्रेमी को पाकर भवप्रीता अपने आप में खुश रहने लगी। वह जहां भी रहती अपने पुराने प्रेमी मृगेंद्र के बारे में सोचती रहती। वह विचार करती रहती कि मृगेंद्र उसे कितना और क्यों चाहता है क्या वह मेरा इस्तेमाल करना चाहता है, क्या मैं उसे सहज ही उपलब्ध हो जाऊंगी। इसलिए वह चाहता है मुझे? भवप्रीता को याद आता है कि उसकी मां को भी लोग ऐसे ही बोलते थे। वह सोचती है कि औरत पर कोई भी ऐसे लांछन लगा देता है इतना सहज कैसे हो जाती है औरतें। जैसे उसने देखा था अपनी मां को लोगों द्वारा गाली दी जाती थी, क्या मेरा बेटा भी ऐसे ही सुनेगा ऐसा सब सोचकर भवप्रीता मृगेंद्र से मिलने अपने बेटे के साथ जाने का निश्चय करती है। भवप्रीता का यह निर्णय औरत की अस्मिता का एहसास कराता है क्योंकि किसी को सहज मिल जाना मतलब अपना अस्तित्व समाप्त करना है, और उपन्यास का अंत होता है जब भवप्रीता अपने बचपन के दोस्त मृगेंद्र से मिलने को तैयार होती है और अपने बच्चे गौतम को भी साथ चलने को कहती है ।

नीरजा माधव जी ने इस उपन्यास में नायिका को प्रमुख पात्र बनाया है नायिका भवप्रीता एक दलित महिला है। जब समाज में कोई महिला प्रताड़ित होती है तो उसे बहुत ही बुरा अनुभव होता है, वह तो पुलिस कांस्टेबल है शायद उसे इस वजह से लोग सम्मान की नजर से देखते हैं। परंतु उसकी संवेदना सभी के साथ है। समाज दलित को किस नजर से देखता है इस पर भी लेखिका ने अपने विचार उपन्यास में साझा किया है। उपन्यास में एक प्रसंग है जब भवप्रीत अपने किसी परिचित के घर जाती है तो उसे उसके घर एक चिड़िया पिंजरे में दिखती है। तो वह चिड़िया के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करती है कि

इसको कितना कष्ट होता होगा। एक निश्चित दायरे में रखा जाता है, खुले आसमान में रहने वाली है। उस पर परचित के घर पर भवप्रीता को दलित होने की वजह से ऐसा बुरा बर्ताव देखने को मिलता है। जैसे वह भी चिड़िया की तरह एक निश्चित दायरे में कैद कर दी गई है। उपन्यास का अंश निम्नलिखित है।" मेरे लिए ट्रे में केवल गिलास शरबत लिए उपस्थित हो गई थी सर की पत्नी। शीशे के गिलास में नारंगी रंग का शरबत। मैं चौक उठी। अभी-अभी तो ललमुनिया वाले पिजड़े के पास से ऐसा ही ग्लास उठाकर कोई लड़का दूसरे दरवाजे की ओर गया था। उस समय भरे पानी को बाउंड्री की ओर झटकते हुए उस लड़के पर मेरा ध्यान अनायास ही चला गया था।..... चलो भवप्रीता: ललमनिया और तुम पिंजरे में कब निकल पाओगे।"[29]

उपरोक्त पंक्तियां नीरजा माधव जी की दलित नायिका जो कि एक पुलिस कांस्टेबल है के साथ घटी घटना है। एक पढ़ी-लिखी दलित महिला के साथ सभ्य समाज की मानसिकता को दर्शाता यह घटनाक्रम है । जो कि लेखिका के कथावस्तु संयोजन का अनुपम उदाहरण है। उपरोक्त प्रसंग ह्रदय स्पर्शी है। जिसमें एक घोसले की चिड़िया जैसा व्यवहार दलित के साथ होता हुआ दिखाया गया है, जिसमें वह पिंजरा समाज की मानसिकता का प्रतीक है। जिसमें समाज का एक वर्ग कैद में रहता है। लेखिका का संकेत है कि लोगों को अपनी सोच को और विकसित करके सोचना चाहिए, कि मेरे सुख के लिए किसी को प्रतिबंध में रखना नहीं चाहिए। उस चिड़िया का भी दर्द सभी को समझना चाहिए । लेखिका ने बताया है कि पिंजरे की चिड़िया व दलित समाज के प्रति सभी की मानसिकता को तोड़ना होगा इसी में सभी की भलाई है। अतः नीरजा माधव द्वारा गढ़ा गया भवप्रीता का चरित्र आधुनिक समाज की दलित महिला का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया जिसमें एक आधुनिक कामकाजी महिला की संवेदनात्मक कहानी है ।

3.2.3. मानवी (यमदीप)

लेखिका नीरजा माधव का यह प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास में नीरजा जी ने समाज के पिछड़े वर्ग की आवाज को उठाया है। भारतीय समाज में कुछ वर्ग ऐसे भी हैं जो लिंग भेद के कारण समाज में उपेक्षित रहते हैं। लेखिका की कलम इन्हीं सामाजिक नजरिए को आईना दिखाने का कार्य करती है। नीरजाजी अपने कहानियो एवं उपन्यासों में हर बार समाज की रूढ़िवादिता व पितृसत्ता की गलत नीति को कटघरे में खड़ा करने का प्रयास करती है। उनका लेखन समाज, व्यक्ति व देश को एक नई दिशा दिखाने का कार्य करता है। यमदीप उपन्यास भी हिंदी साहित्य के उपन्यास विधा में एक महत्वपूर्ण अंश की तरह है। इस उपन्यास में दो मुख्य पात्र हैं। मानवी और नाजबीवी। दोनों की कहानी अलग-अलग है। मानवी एक समाचार पत्र में नियमित स्तंभ लिखने वाली पत्रकार है। और नाजबीवी एक उभय लिंगी चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों चरित्र अपने जीवन का संघर्ष अलग- अलग रहकर करते हैं, परंतु अंत में नाजबीबी भी नारी के अधिकारों व अस्तित्व को दमन से बचाने के लिए मानवी के साथ हो जाती है। यमदीप उपन्यास मानवी व नाजबीवी दोनों को समान रूप से चित्रांकन करता है। यह निश्चित करना कठिन है कि मुख्य नायिका कौन है। यह उपन्यास 26 भागो में लिखा गया है। दोनों चरित्रो का सामंजस्य बनाकर क्रमशः अलग-अलग कथा चलती है। अंत में जाकर दोनों चरित्र स्त्री शोषण पर एक हो जाते हैं। यह मुख्यता नायिका प्रधान उपन्यास है। इसमें स्त्री के साथ होने वाले तरह-तरह के अत्याचारों को दिखाया गया है। नारी समाज में कैसे-कैसे प्रताड़ित होती है। ऐसा लेखिका ने उपन्यास में विभिन्न पात्रों के द्वारा समझाया है। इसमें पागल स्त्री, हिजड़ों का पूरा समुदाय, मानवी के साथ अन्य पात्र, स्त्रियों की दशा को बताने के लिए मानवी के अखबार का यह स्तंभ सबसे महत्वपूर्ण है। जिसके माध्यम से स्त्री शोषण व

प्रतिकार की दशा का प्रस्तुतीकरण दिखाया है। उपन्यास का नाम यमदीप है यम का मतलब 'नरक' और दीप का मतलब 'दिया' है। किन्नरों पर लिखा गया यह हिंदी साहित्य का प्रथम उपन्यास है। इसमें नाजबीवी नामक पात्र है। किन्नरों के संदर्भ में यह उपन्यास अत्यंत संवेदनशील व सार्थक है। किन्नरों को उनकी शारीरिक भिन्नता के कारण परिवार से भी अलग कर दिया जाता है वह अपना जीवन यापन लोगों की खुशियों पर नाच-गाना करके करते हैं। समाज की लोक लाज के कारण इनके माता-पिता भी इससे दूर रहने को विवश हो जाते हैं। ऐसा माता-पिता को अन्य परिवार के सदस्यों के कारण करना ही पड़ता है। किन्नरों के परिवार वाले एक बार अलग होने पर उन्हें देखने व खोज खबर लेने नहीं आते हैं। जब किन्नर अपने परिवार में कभी मिलने जाते हैं तो वह भी माता-पिता के अलावा किसी अन्य को अच्छा नहीं लगता। इन्हीं सब बातों को लेकर लेखिका में यमदीप उपन्यास लिखा है। इस के संदर्भ में उपन्यास की निम्न पंक्ति सार्थक ही लगती है।" घर के एक दिए को केवल यम से संवाद करने के लिए उठाकर (कूड़ा- करकट) पर रख देना और फिर उधर मुड़ कर भी ना देखना कि वह कब तक जलते- जलते बुझा सत्य से विमुख होना है।"[30]

इस उपन्यास में मानवी के साथ-साथ नाजबीबी सह पात्र हैं। मानवी जहां स्त्री विमर्श का प्रतीक है। तो नाजबीवी किन्नर समुदाय की। किन्नरों पर पहली बार कोई रचना हुई थी उपन्यास विधा में। इस उपन्यास के संदर्भ में किरण ग्रोवर ने लिखा है कि" किन्नरों संबंधी कथानक का चयन करना नीरजा माधव की सामाजिक दृष्टि की संपन्नता व जागरूकता को रेखांकित करता है। क्योंकि, इन्होंने किन्नरों के जीवन यथार्थ की परतों को खोला है।"[31]

निश्चय ही नाजबीवी के माध्यम से लेखिका ने किन्नरों से संबंधित सामाजिक मिथक पर एक सत्य और यथार्थ पहलू पर लेखन किया है। कहानी का प्रारंभ होता है नाजबीबी अपने किन्नर समुदाय के साथ धंधे पर जा रही थी, तो रास्ते में एक औरत कराह रही थी। उसे प्रसव पीड़ा थी। किन्नर समूह ने आसपास की बस्तियों की औरतों को बुलाया परंतु कोई नहीं आया मदद करने। प्रसव पीड़ा से एक बच्ची का जन्म होता है। जन्म देने के बाद वह औरत जो पागल थी, मर जाती है। उस बच्ची को लेकर नाजबीवी अपने ठिकाने आ जाती है और पालन पोषण करती है। अपने एक किन्नर साथी की सहायता से बच्ची को स्कूल भी भेजती है। इसी बच्ची के पालन पोषण में नाजबीवी भी अपनी कहानी याद करती हैं कि वह भी अपने माता-पिता की लाडली थी। परंतु प्रकृति की वजह से उन्हें घर छोड़ना पड़ा। वह अपने माता-पिता परिवार को बहुत याद करती हैं। नाजबीवी जिस बच्ची को पालती हैं वह जब इग्यारह -बारह वर्ष की हो जाती है। तो, उसकी सूचना कोई पुलिस को दे देता है। पुलिस आकर सोना को ले जाना चाहती है। किसी तरह सोना को पुलिस के हाथों से बचाते हैं। अगले दिन सोना को नारी सुधार गृह में पहुंचा दिया जाता है।

इसी तरह मानवी है जो कि एक पेशेवर पत्रकार है। वह अखबार में स्त्री संबंधी साप्ताहिक स्तंभ लिखती है, वह अपना कार्य बहुत ही ईमानदार से करती है जिससे उसका प्रभाव कार्यालय व समाज में अच्छा है। वह बड़े-बड़े लोगों का इंटरव्यू लेती है। अपने लेख के जरिए वह समाज का स्त्री के प्रति नजरिया कैसा है, कैसा होना चाहिए खूब प्रभावशाली ढंग से दिखाती है। जिससे मानवी की पहचान शहर के मुख्य लोगों से हो जाती है। मानवी के भैया मां बाप की सेवा नहीं करना चाहते, तो वह गांव से अपने माता- पिता को साथ रहने को बुला लेती है। जो कि एक नारी के स्वाभिमान को दिखाता है। वह नारी सुधारगृह की लड़कियों का साक्षात्कार लेती है। उसमें से एक पूनम है, जो कि मानवी को चोरी से

अपने घर का पता दे देती है । ताकि उसके घर सूचना हो जाए। और वह अपने घर जा सके। मानवी पूनम के घर सूचना भेजती है। परंतु लोक-लज्जा के भय से वे पूनम को ले जाने को तैयार नहीं होते हैं। इन्हीं बातों से मानवी बहुत परेशान होती है। वह चाहती है कि समाज का यह स्त्री- पुरुष के प्रति दोगलापन बदल जाए। लेखिका मानवी से यह प्रश्न उठाती है कि स्त्री- पुरुष में इतना भेद क्यों? खास करके उसके अपने परिवार में ही।

" क्या आप भी ऐसा ही सोचते हैं? इन लड़कियों के घर के बाहर कदम रख दिया तो इतना बड़ा अपराध कर दिया? लड़के भागकर नहीं चले जाते? दस पाँच वर्ष बाद जब वह लौटकर आ जाते हैं तो क्या मां-बाप उन्हें सीने से नहीं लगा लेते..... फिर लड़की का यही अपराध इतना अक्षम्य ?"[32]

समाज का ऐसा दोगला चरित्र है कि एक ही गलती पर किसी को सजा देना हुआ तो किसी को माफ करना । लेखिका ने यह बात पत्रकार मानवी द्वारा सुधार गृह मैं रहने वाली लड़कियों के माता-पिता को कही है । सत्य है ऐसा समाज का रूढीग्रस्त नियम बन गया है कि लड़की अगर गलत है तो माता-पिता की इज्जत चली गई वही यदि लड़का गलत हुआ तो माता-पिता की इज्जत खराब नहीं होती। समाज में ऐसी ही कहावत बन गई है कि परिवार की संपत्ति लड़के संभालते हैं और इज्जत लड़कियां। मानवी के कार्यालय में हरेंद्र अपने साथियों के साथ आता है, हरेंद्र व मानवी की दुश्मनी कालेज के समय से गांव से है। हरेंद्र को गोली मारने के आरोप में उसका भाई जेल में है। हरेंद्र उसे सांप्रदायिकता फैलाने वाली खबर छापने को कहता है ऐसा न करने पर वह उसे धमकी देता है। हरेंद्र की बात मानवी डी॰एम॰ आनंद कुमार को बताती है । तब उसे एक पुलिस कर्मी देवता पांडे नामक सुरक्षा के लिए मिलता है सुरक्षाकर्मी खुद मानवी के साथ दुर्व्यवहार करता है, तो

मानवी परेशान हो जाती है क्योंकि रक्षक ही भक्षक बन जाता है। नारियों को पुरुष कितना कमजोर समझ लेता है इस संबंध में लेखिका नमिता सिंह से बताते हैं कि" यह जिंदगी तो जैसे अंधेरे घने जंगल में निकलने वाली पगडंडी का नाम है कब किधर से कोई बाघ या भेड़िया हमला कर दे कुछ पता ही नहीं। "[33]

मानवी को जहां कदम-कदम पर समाज की असभ्यता के दर्शन होते हैं। जैसे स्त्री सुधार गृह की पूनम की घटना हो, सांप्रदायिकता के खिलाफ किन्नर गुरु देशभक्ति परक व धर्म के नाम पर दंगा करने वालों को मुंहतोड़ जवाब की घटना हो, हरेंद्र और मानवी की कॉलेज की घटना हो। फिर भी वह एक साहसी व्यक्तित्व वाली महिला बनकर रहती है। नीरजा माधव का बुना मानवी का चरित्र समाज को नई दिशा दिखाता है । इन सब पितृसत्तात्मक मानसिकता के इतर एक चरित्र है, आई॰ए॰एस आनंद कुमार जो नैतिकता व ईमानदारी का द्योतक है। आनंद आधुनिक सोच का युवक है, इसके इन्हीं गुणों पर मानवी आकर्षित हो जाती है । आनंद कुमार भी मानवी के कार्य के प्रति तत्परता व संघर्ष को देखकर प्रभावित होते है। नारी के प्रति आनंद के विचार से मानवी प्रभावित होती है, वह आनंद के पुरुष होने पर भी नारी की पुरुष से मुक्ति पर चर्चा करती है। दोनों इस बात पर सहमत होते हैं कि पुरुष के साथ रहकर ही नारी मुक्ति संभव है । उपन्यास के अंत में नाजबीवी व मानवी मिलकर मन्ना बाबू के काले कारनामों को उजागर करते हैं। इसमें सबसे बड़ी सहायता आनंद कुमार करते हैं, क्योंकि आनंद का तबादला उसी शहर में बनारस में फिर से हो गया था। नाजबीवी की बच्ची सोना को भी आनंद के माध्यम से बचा लेते हैं । अब मानवी के साथ सोना रहेगी। नीरजा माधव के उपन्यास से मानवी नारी के अधिकारों व वजूद के लिए संघर्ष करने वाली नारी है। वह नारी सुधार गृह स्वामिनी के अपराध को उजागर करके उसे जेल करवाती है । सोना सहित सुधार गृह की सभी लड़कियों को

रीतादेवी के चंगुल से छुड़ाती है। प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक, शहरी-ग्रामीण परिवेश, बुजुर्गों, महिलाओं, किन्नरों के प्रति समाज व परिवार की दुर्भावना को दिखाता है, लेकिन इस रचना में विभिन्न विमर्शों को समान रूप से संतुलित किया गया है।

3.2.4 देवयानी (गेशेजम्पा)

हिंदी साहित्य में कुछ ऐसे विषय हैं, जिन पर लेखन कार्यक्रम नहीं हुए हैं। नीरजा माधव के लेखन विषय की व्यापकता इतनी है कि वह अनछुए विषयों पर बड़ी बेबाकी से लेखन करती हैं। उनका गेशेजम्पा उपन्यास भारत के बाहर की राजनीति पर आधारित है। तिब्बत के प्रति चीन की नियति पर सार्थक दस्तक है। तिब्बत पर हो रहे अत्याचार पर मानवाधिकार के साथ-साथ विश्व की मौन प्रवृत्ति पर भी सवाल उठाया है। राजनीति व कूटनीतिक को आधार बनाकर नीरजाजी ने तिब्बतियों के शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की है। यह उनकी प्रतिभा व मौलिक दृष्टि का परिणाम है। तिब्बत में चीन के द्वारा किए गए विध्वंस के प्रयासों का प्रतिकार तिब्बतियों के सिवा कोई नहीं कर रहा है। वे तिब्बत के निकलकर दूसरे देशों में शरण ले रहे हैं, चीन के इस दमन चक्र में सबसे ज्यादा प्रभावित महिलाएं हुई हैं। क्योंकि पुरुष व बच्चे को चीनी मे सेना जबरदस्ती भर्ती किया जा रहा है। महिलाओं को घरों में अकेला छोड़ा जा रहा है। उन्हें ना कोई कारोबार का अधिकार है, ना बच्चों को शिक्षा का अधिकार है। पूरा तिब्बत धीरे-धीरे खाली होता जा रहा है। यहां के लोग दूसरे देशों में शरण लिए हुए हैं। वहीं पर अपनी सभ्यता व संस्कृति को जिंदा रखने का प्रयास कर रहे हैं। यहां के लोग तिब्बत से निकलकर अन्य देशों में मुख्य रूप से भारत में अपनी संस्था व अन्य संगठन स्थापित करके जीवन यापन कर रहे

हैं। तिब्बत के लोग चीन की निगरानी में रहते हैं। चीनी सैनिक तिब्बतियों के गांव घरों में घूमते रहते हैं उनकी हरकतों पर निगाह रखते हैं। यदि प्रताड़ना के खिलाफ कोई आवाज उठाता है तो उसे किसी आरोप में जेल के अंदर कर देते हैं। ज्यादातर तिब्बती पुरुष जेल में ही बंद हैं। चीनी नियति उन्हें आजाद करने की नहीं है। चीन चाहता है कि तिब्बत पर अधिकार कर ले। तिब्बत के लोगों की प्रवृत्ति धार्मिक है, वह हिंसा नहीं करना चाहते इसी कारण चीन की विध्वंसकारी नीतियों का विरोध करने में पीछे होते जा रहे हैं। इन्हीं कारणों से तिब्बतियों का पलायन होता जा रहा है। खास करके पुरुषों का पलायन अधिक है। महिलाएं व बुजुर्ग अपने पैतृक घर की देखभाल करते हैं। पुरुष और बच्चे पलायन कर जाते हैं। अन्य देश में जाकर रहते हैं, वहां जीवन यापन के लिए कार्य व्यापार करते हैं। वहां पर उनका समूह बन गया है। प्रदेश में वह एक चुने हुए शहर में निश्चित स्थान पर स्कूल व अन्य संस्थान बनाकर रहते हैं ताकि पलायन होकर आए अन्य बच्चों को शिक्षा व तिब्बती संस्कृति से जोड़कर रखा जा सके। वह जिस शहर में रहते हैं वहां की भाषा, तिब्बती भाषा व अंग्रेजी भाषा तीनों का ज्ञान कराया जाता है। तिब्बती रीति- रिवाज व संस्कारो की भी शिक्षा देते हैं। उन्हें उम्मीद है कि वह कभी ना कभी तिब्बत लौट कर जाएंगे और अपनी वही सभ्यता व संस्कृति को प्राप्त करेंगे। इस के संदर्भ में गेशेजम्पा उपन्यास में मिलता है कि वर्तमान समय में चीनी शासन प्रशासन तिब्बत को समस्त रूप से समाप्त करना चाहते हैं। चीनी सेना तिब्बती लड़कियों का वध कर देती हैं, लड़कियों को अपनी सेना में भर्ती कर देते हैं, जो कि वह सेना तिब्बतियों को ही परेशान करती है। पुरुष को किसी आपराधिक मामले में फंसा कर कैद कर देते हैं फिर उन्हें कैद ही रहने देते हैं। तिब्बत की इन विषम परिस्थिति में चीनी कट्टरता व प्रताड़ना के खिलाफ यहां के स्त्री-पुरुष आशावादी बने हुए हैं। वह हिंसा का प्रतिरोध हिंसा से करना नहीं चाहते हैं। तिब्बतियों की यह अहिंसक भावना व अपना देश फिर से पाने की आशा ही इस रचना का आधार है। तिब्बत की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए गेशेजम्पा उपन्यास की पंक्तियां हैं जो वहां के हालात को बयां करती हैं।

" तिब्बत की स्थिति दिनों- दिन दयनीय होती जा रही है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक शोषण के साथ ही अब उनकी धार्मिक परंपराओं पर भी अपने देश में कुठाराघात हो रहा है। तिब्बती मठों और विहारो से शिशुओं को संख्या कम कर दी गई है। एक-एक बिहार में जहां पहले आठ -आठ हजार शिशु रहते थे, वहीं अब उंगलियों पर गिने दो- चार बौद्ध भिक्षु ही रह पाते हैं। धर्मोपदेश पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया है।"[34]

तिब्बती शरणार्थी के जीवन व समस्याओं पर आधारित इस उपन्यास में सिर्फ करुणा व सहानुभूति का भाव नहीं है, बल्कि कई वैचारिक चिंतन भी है। जो जीवन व समाज के संबंधों पर अपना- अपना नजरिया प्रदर्शित करते हैं। इस उपन्यास में 'लोये' और 'श्यू शिन गहू' की प्रेम कथा दिखाया गया है । गेशेजम्पा व देवयानी का प्रेम भी दिखाई देता है। प्रेम और कर्तव्य के द्वंद में कर्तव्य विजयी होता है। यह उपन्यास की कथा कहीं-कहीं फ्लैशबैक शैली में चली जाती है, तिब्बत से पलायन करते हुए लोगों को दिखाते हुए कब लेखिका नीरजाजी वर्तमान में कथा ला देती हैं पाठक को पता ही नहीं चलता। गेशेजंपा की कथा बचपन से तिब्बत में प्रारंभ होकर, वहां के हालात व पलायन को दिखाते हुए अन्य देशों में बसने का उपक्रम उपन्यास में है। कैसे वाराणसी के सारनाथ में गेशेजम्पा शिक्षा लेकर स्कूल आदि संस्था आज चलाता है। विभिन्न देश की सरकारो की बातें व आर्थिक सामाजिक हालात बताए गए हैं उपन्यास बड़े स्वाभाविक रूप से स्त्री और पुरुष के बीच आकर्षण का चित्रण किया गया है। यदि ऐसा न होता तो यह रचना राजनीतिक विवरण की सूची जैसी लगती। जैसे गेशेजम्पा व देवयानी की अर्थपूर्ण बातें जीवन की उलझहनों को व्यक्त करती हैं। इस कृति के अध्ययन से तिब्बत के जीवन- यापन, खान-पान, वस्त्र-आभूषण व भौगोलिक संज्ञान को आसानी से लिया जा सकता है। तिब्बत के आहत मन को समर्पित नीरजाजी की यह रचना निश्चय ही तिब्बतियों की भावना को प्रदर्शित करता है।

तिब्बत का यथार्थ चित्र साकार करने वाली इस पहली रचना का निश्चित रूप से पाठक समुदाय में स्वागत होना चाहिए ।

3.2.5 फूलझडी मंजूलरानी (इहामृग)

इहामृग उपन्यास अट्ठारह सोपान में है । इहामृग नामकरण से विभिन्न युगों का परिचय जैसा लगता है। जो धार्मिक पर्याय भी रखता है। इस उपन्यास में पाश्चात्य शोधपरक बातों, बुध के दर्शन व उनके विभिन्न तत्वों को चित्रित किया गया है। इसमें उपन्यास का नायक मि. माँडवेल भारत में आकर अलभ्यानंद नाम धारण करता है। मि. माँडवेल अमेरिका देश से बुध की भूमि सारनाथ में शांति की तलाश में आए हुए है । इन के संदर्भ में मांडवेल का कहना है कि " शांति! शांति की तलाश में ही तो आया हूं अमेरिका से, इसलिए बुद्धिज्म में आया ।"[32]

मांडवेल के साथ उनकी पुत्री सेरेना भी शांति की खोज में व बुद्ध के विचारों पर शोध करने आती है। वह अपना नाम गौरी रखती है। इहामृग उपन्यास में नारी के शोषण का भी वर्णन है। इसमें नगर में रहने वाले व झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले समूह के जीवन स्तर का वर्णन मिलता है। नारी पात्र मंजूलरानी और फुलझड़ी आदि की पीड़ा को दर्शाया है। मंजूलरानी का पति जो कि समाज सेवा के नाम पर विदेशों से सहयोग लेता है, उसमें से खुद के लिए पैसा निकालता है। सरकार भी गरीबों को घर बनाने के लिए जगह उपलब्ध नहीं करा सकती, परंतु विदेशियों को मूर्ति स्थापित करने के लिए स्थान दे देती है। ऐसे बहुत सी विडंबनाओं का वर्णन मिलता है। उपन्यास के अन्य पात्र जैसे मधुसूदन जो कि पेशे से पत्रकारिता करता है। वह सामाजिक विडंबना को दिखाता है। आधुनिकता में मगन पीढ़ी की बुराइयों को दिखाने के लिए लेखिका ने हंसू नामक पात्र को चुना है, जो कि एक बिगड़ैल बेटा है। उपन्यास में धर्म के बाजारीकरण, पाखंड आदि सामाजिक

विसंगत को दिखाया गया है। बुद्ध के जिस ज्ञान को सारनाथ से प्रसारित किया गया वह पूरे विश्व मे प्रसारित है । इहामृग उपन्यास में पितृसत्ता की सोच को भी दिखाया गया है। जहां स्त्री वस्तु समझी जाती है। फुलझड़ी अपने भाई को खोजते हुए खंडहर में जाती है जहां उसे हंसू मिल जाता है वह फुलझड़ी को गुफा के अंदर बहका कर ले जाना चाहता है, परंतु हंसू की हवस को वह पहचान जाती है। और सुरंग में जाने से इंकार कर देती है और वह हंसू का विरोध करती है। उसके पिता भी उससे घर पर कुछ बुरा बर्ताव करते हैं। वह न घर में सुरक्षित थी और ना बाहर ही सुरक्षित थी।इस प्रसंग से स्त्री की विडंबना को बखूबी दिखाया गया है। हंसू लगातार फुलझड़ी पर शिकारी नजर रखता है। एक दिन रात में वह फुलझड़ी को अकेला पाकर अपनी हवस का शिकार बना लेता है जिससे वह बहुत दुखी होती है। वह खुद को आग लगा लेती है और जल जाती है। इस उपन्यास एक नारी की मर्मस्पर्शी कथा व समाज व परिवार के दोगले पन को प्रदर्शित किया गया है ।

3.2.6 लोये, देवयानी (देनपाः तिब्बत की ड़ायरी)

'देनपा- तिब्बत की डायरी' नीरजा जी का प्रसिद्ध उपन्यास है, जो डायरी शैली में लिखा गया है। इसमें दिनांक व महीने सहित अंकन किया गया है। यह उपन्यास स्त्री प्रधान उपन्यास है। नारी किसी भी देश प्रदेश की हो उसके साथ न्याय होना चाहिए। चीन की गलत नीति से विस्थापित हो रहे तिब्बती बच्चे व पुरुष अलग-अलग देश में शरण ले रहे, और अपनी संस्कृति व बच्चों को शिक्षित कर रहे हैं। परंतु पलायन के बाद वहां पर सिर्फ महिलाएं ही बचती हैं। जो चीनी सेना द्वारा शोषित व प्रताड़ित होती हैं। इस उपन्यास मे तिब्बत की व्यथित नारी का इतिहास है। नारियों के उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाई गई है। देनपा तिब्बत की डायरी के संबंध में 'साक्षात्कार' पत्रिका में नंदकिशोर शुक्ल ने

कहा है कि" यह कृति तिब्बत का राजनीतिक सामाजिक, सांस्कृतिक, सांगोपांग एवं प्रकृति का यथार्थ चित्रण है।"[35]

इस उपन्यास में देनपा नामक महिला को मुख्य पात्र बनाया गया है। जो देवयानी से अपने सारे अतीत की बातें बताती है। चीनी सैनिकों ने तिब्बत की महिलाओं का बहुत ही शोषण अत्याचार किया है। जिससे उनकी जिंदगी नरक के समान हो गई है। इन्हीं चीनी दुर्व्यवहार से बचने के लिए तिब्बत की महिलाएं भारत में आकर बस गई हैं। परंतु वह अपने देश से अब भी उतना ही स्नेह रखती हैं। देनपा तिब्बत से आकर भी आत्मनिर्भर व आत्मविश्वास पूर्ण स्त्री है। वह रूड़ि व आडंबर को नहीं मानती। वह अपने भाई सोनम ढकवा के साथ मठ में रहने लगती है। और तिब्बत से पलायन किये हुए बच्चों की देखभाल करती है। इसमें प्रेम कहानी का भी विवेचन किया गया है। थिनले और लोब्जंग योद्धा जैसी नारी हैं। जो चीन के सैनिकों से लड़ाई भी करती हैं। अपमानित होने पर बदला लेने के लिए अपने बेटे को मजबूत बनाकर तैयार करती हैं।इस उपन्यास मे वृद्ध महिलाओं को भी तिब्बत के लिए संघर्ष करते दिखाया है। यह देनपा उपन्यास गेशेजंपा उपन्यास के बाद लिखा गया है, अतः इसे गेशेजंपा का सिक्वेल भी कहते हैं। देनपा उपन्यास में नारियों पर होने वाले नीरजाजी के लेखन के स्तर की चर्चा मे डॉक्टर रिचा सिंह कहती हैं कि " देनपा तिब्बत की डायरी पढ़ते हुए मुझे लगता है कि यहां से लेखिका नीरजा की सोच का फलक विस्तार पा रहा है।" [36]

3.2.7 आमोदिनी , मानसी (रात्रीकालीन संसद)

नीरजा जी के साहित्य का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वह बहुत प्रतिभाशाली लेखिका हैं। रात्रिकालीन संसद नामक उपन्यास 2013 ईस्वी में प्रकाशित हुआ था। इसमें खंडों की संख्या 11 है। इस उपन्यास मे कथा का प्रारंभ

आकाशवाणी केंद्र सारनाथ वाराणसी से होता है। इस उपन्यास में आतंकवादियों के मंसूबे पर बात की गई है। आतंकी हमले से भारत में जो वैमनस्य फैल रहा है उस पर चिंता व्यक्त की गई है। आतंकी हमला करने वाले किसी एक समूह के ही होते हैं। जो कि विदेशी ताकतों से प्रायोजित होते थे। परंतु आतंकी हमला मरने वालों से जाति, धर्म, संप्रदाय आदि नहीं देखता।,सबको नुकसान देता है। परंतु देश के राजनीतिक दल उसमें सच्चाई जानने के बदलते सांप्रदायिक खेल खेलते हैं, और अपना फायदा देखते हैं। यह सब बाते रात्रिकालीन संसद उपन्यास मे विभिन्न पात्रो की है। मूल रूप से देखा जाए तो इस उपन्यास को की मूल भावना राष्ट्रीय मानवीय मूल्यों को उठाने की है। उपन्यास में जो सीमित पात्र हैं वे विषय के अनुसार रखे गए हैं। इसमें सबसे रोचक प्रसंग है, जब आकाशवाणी के संग्रहालय में रखी गई महापुरुषों की रिकॉर्डेड गैजेट्स जो आपस में बात करते हैं। वह वर्तमान,भूत, भविष्य को लेकर हर मुद्दे पर बात करते है। इस उपन्यास के संदर्भ में डॉक्टर बृजबाला सिंह का कथन है कि " इस दुनिया में हर प्राणी एक चलता फिरता टेप है जिसमें कोई ना कोई कहानी रिकॉर्ड है, सुखांत कम दुखांत अधिक जीवन के इस यथार्थ को केंद्र में रखकर रचा गया उपन्यास रात्रि कालीन संसद ख्यातिलब्ध कथा लेखिका नीरजा माधव की रचनात्मक श्रृंखला की एक उत्तम और विशिष्ट कड़ी है।"[37] रात्रिकालीन संसद अपने तरह का एक अलग उपन्यास है। इस उपन्यास विभिन्न स्थानों पर सामाजिक विसंगतियों के संदर्भ में सवाल उठाया गया है। यह नीरजा माधव की एक विशिष्ट और अनुपम कृति है ।

सन्दर्भ

1. वाया पांडेपुर चौराहा (कहानी संग्रह), कहानी-शीर्षक क्या दूँ ?, नीरजा माधव, पृष्ठ. 163
2. वही, पृष्ठ. 164
3. वही, पृष्ठ. 170
4. पचपन खम्भे लाल दीवारें : एक विवेचन, डॉ. बिमलेश, पृष्ठ. 73
5. कहानी-हव्वा, नीरजा माधव, पृष्ठ. 87
6. पथदंश (कहानीसंग्रह), कहानी- तूफान आनेवाला है, नीरजा माधव, पृष्ठ. 42
7. वही, पृष्ठ. 46
8. अभी ठहरो अन्धी सदी(कहानी संग्रह), कहानी-लड़ाई जारी है, नीरजा माधव, पृष्ठ.121
9. वही, कहानी-एरियर, पृष्ठ. 144
10. प्रतिरोध के स्वर, सुदेश पत्रा, पृष्ठ. 38
11. वही, कहानी-एरियर, पृष्ठ. 148
12. वही, कहानी-देश के लिए,नीरजा माधव, पृष्ठ. 93
13. वही, पृष्ठ . 97
14. प्रेम सम्बन्धों की कहानियाँ (कहानीसंग्रह), कहानी-वह नहीं तो यह, नीरजा माधव, पृष्ठ. 82
15. वही, पृष्ठ, 22
16. वही, कहानी-चिटके आकाश का सूरज, पृष्ठ.28

17. वही, पृष्ठ. 28-29

18. वही, कहानी-सुभद्रा का चक्रव्यूह, पृष्ठ. 37

19. वही, कहानी-अपने न होने का एहसास, पृष्ठ. 38

20. वही, कहानी-आदिम गंध, पृष्ठ.72

21. वही, पृष्ठ.74

22. वही, कहानी-उपसंहार:अब क्या करें?, पृष्ठ. 177

23. तेभ्यः स्वधा, नीरजा माधव, पृष्ठ .38

24. वही, पृष्ठ .52-53

25. वही, पृष्ठ. 47-48

26. वही, पृष्ठ. 48

27. वही, पृष्ठ. 74

28. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी, नीरजा माधव, पृष्ठ. 48

29. यमदीप, नीरजा माधव, पृष्ठ. 7

30. वही, पृष्ठ. 21

31. वही, पृष्ठ. 98

32. अपनी सलीबें, नमिता सिंह, पृष्ठ. 32

33. गेशेजम्पा, नीरजा माधव, पृष्ठ. 122

34. साक्षात्कार पत्रिका, पृष्ठ. 116

35. इहामृग, नीरजा माधव, पृष्ठ. 19

36. सृजन के आयाम- नीरजा माधव, सं. बृजबाला सिंह, पृष्ठ. 153